नए नियम के लोग

लेखक :
सनी डेविड

सत्य सुसमाचार रेडियो संदेशमाला

प्रकाशक :

मसीह की कलीसिया
पोस्ट बॉक्स नं० 3815
नई दिल्ली-110 049.

प्रथम संस्करण :

1983

मुद्रक :

प्रिन्ट ए-38/1 मायापुरी, नई दिल्ली-110064.

PEOPLE OF THE NEW TESTAMENT

By :
Sunny David

Published By :

Church of Christ
Post Box 3815
New Delhi-110 049

Table of People

		Page
1.	Jesus Christ	9
2.	The Disciples of Jesus	16
3.	Peter	22
4.	Paul	28
5.	Pilate	34
6.	Zacchaeus	40
7.	Rich Fool	46
8.	Prodigal Son	52
9.	Rich Ruler	58
10.	Lazarus and The Rich Man	64
11.	Eunuch	70
12.	Ananias and Sapphira	76

सूचना !

सत्य सुसमाचार रेडियो पर सुनिए

प्रत्येक :

मंगलवार, बृहस्पतिवार तथा शुक्रवार के दिन रात को नौ बजे और रविवार को दिन में डेढ़ बजे ।

यह कार्यक्रम रेडियो श्रीलंका से १९,२५ तथा ४१ मीटर बैन्ड पर सुना जा सकता है ।

प्रचारक :

सनी डेविड

सूचना

सुसमाचार प्रवचनों की निम्नलिखित अन्य रचनाओं को भी प्राप्त किया जा सकता है :

१. यीशु के संदेश
२. प्रसन्नता का रहस्य
३. प्रश्न प्रवचन
४. सुसमाचार प्रवचन
५. बीस लघु रेडियो संदेश
६. जीवन के वचन
७. मसीही संदेश
८. पुराने नियम के अनुसार
९. नए नियम के अनुसार
१०. मसीह के दावे
११. ऐसा बड़ा उद्धार
१२. क्या यह सच है ?
१३. वस्तुएं जो विशाल हैं
१४. बाइबल प्रवचन
१५. यीशु के दृष्टान्त
१६. क्या आपका जीवन सुरक्षित है ?
१७. पुराने नियम के लोग

लोगों की सूची

		पृष्ठ
1.	यीशु मसीह	9
2.	यीशु के चेले	16
3.	पतरस	22
4.	पौलुस	28
5.	पीलातुस	34
6.	ज़क्कई	40
7.	मूर्ख धनी	46
8.	उड़ाऊ पुत्र	52
9.	धनी सरदार	58
10.	लाज़र और धनवान	64
11.	खोजा	70
12.	हनन्याह तथा सफ़ीरा	76

परिचय

बाइबल का नया-नियम हमें अनेकों लोगों के विषय में बताता है। इनमें से कुछ सामाजिक रूप से बड़े तथा कुछ छोटे थे। कुछ धनवान थे तो कुछ निर्धन थे। कुछ अच्छे थे और कुछ बुरे थे। और यही बात है कि परमेश्वर का वचन हमें लोगों के विषय में बताता है कि उनकी क्या-क्या कठिनाईयां हैं, उनकी आवश्यकताएं क्या हैं, उनके उद्धार के बारे में और यह भी कि प्रभु उनके लिये क्या कर सकता है।

नये नियम में हम एक विशेष और महान व्यक्ति के विषय में पढ़ते हैं जिसका नाम है यीशु। उसके प्रेरित तथा अन्य लोग जिनके विषय में हम पढ़ते हैं, इसलिये विशेष कहलाए क्योंकि उनका संबंध उससे था। कुछ ऐसे ही लोगों का वर्णन भाई सनी डेविड ने अपनी इस पुस्तक में किया है। इस पुस्तक के अध्ययन के द्वारा हम अपने लिये शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं।

यह प्रवचन भाई सनी डेविड ने इसलिये तैयार किये हैं ताकि आप इन्हें रेडियो के माध्यम से सुन सकें। अब जबकि इन पाठों को एक पुस्तक का रूप दिया गया है, हमारी आशा है कि आप इनका अध्ययन करके लाभ उठाएंगे।

जबकि आप इन प्रवचनों को पढ़ते हैं, परमेश्वर आपको आशिष दें तथा आपकी सहायता करें ताकि आप उसकी इच्छा को जानकर उसकी आज्ञा को मान सकें।

जे० सी० चोट
मसीह की कलीसिया
नयी दिल्ली

यीशु मसीह

मित्रो !

पवित्र बाइबल में एक स्थान पर हम इस प्रकार पढ़ते हैं, "यदि मैं मनुष्यों और स्वर्गदूतों की बोलियां बोलूं, और प्रेम न रखूं, तो मैं ठनठनाता हुआ पीतल और झनझनाती हुई झांझ हूं। और यदि मैं भविष्यद्वाणी कर सकूं, और सब भेदों और सब प्रकार के ज्ञान को समझूं, और मुझे यहां तक विश्वास हो, कि मैं पहाड़ों को हटा दूं, परन्तु प्रेम न रखूं, तो मैं कुछ भी नहीं। और यदि मैं अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति कंगालों को खिला दूं, या अपनी देह जलाने के लिये दे दूं, और प्रेम न रखूं, तो मुझे कुछ भी लाभ नहीं।" और फिर प्रेम की विशेषता को प्रकट करके परमेश्वर का बचन कहता है, "प्रेम धीरजवन्त है, और कृपाल है; प्रेम डाह नहीं करता; प्रेम अपनी बड़ाई नहीं करता, और फूलता नहीं। वह अनरीति नहीं चलता, वह अपनी भलाई नहीं चाहता, झुंझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता। कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता है। वह सब बातें सह लेता है, सब बातों की प्रतीति करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धीरज धरता है।" (१ कुरिन्थियों १३:१-७)। और मित्रो, ऐसे ही सच्चे तथा स्वार्थ-रहित प्रेम को हम अपने परमेश्वर के भीतर देखते हैं। बाइबल में हमें एक जगह यूं मिलता है, "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश

न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" (यूहन्ना ३ । १६)। और, "जो प्रेम नहीं रखता, वह परमेश्वर को नहीं जानता, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है। जो प्रेम परमेश्वर हमसे रखता है, वह इससे प्रगट हुआ, कि परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को जगत में भेजा है, कि हम उसके द्वारा जीवन पाएं। प्रेम इसमें नहीं, कि हमने परमेश्वर से प्रेम किया; पर इसमें है कि, उसने हमसे प्रेम किया; और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए अपने पुत्र को भेजा।" (१ यूहन्ना ४ : ८-१०)। क्योंकि "परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मरा।" (रोमियों ५ : ८)।

सो हम देखते हैं, कि परमेश्वर ने जगत में हर एक मनुष्य से एक महान् प्रेम रखा। और उसके प्रेम की महानता को हम इस बात में देखते हैं, कि उसने मनुष्य को पाप से बचाने के लिए स्वयं अपने ही पुत्र को बलिदान कर दिया। मनुष्य पापी है, क्योंकि वह परमेश्वर की इच्छा के विरोध में चलता है। वह अपने मुंह से और विचारों से और अपने कामों के द्वारा पाप करता है। इसलिए पाप के कारण वह परमेश्वर से अलग है, अर्थात् आत्मिक दृष्टिकोण से उसमें जीवन नहीं है, वह मरा हुआ है। परन्तु परमेश्वर ने मनुष्य से प्रेम रखा, और ऐसा प्रेम रखा, कि अपने साथ मनुष्य का मेल करने के लिए, और उसे आत्मिक तथा अनन्त जीवन देने के लिये उसने अपने ही एकलौते पुत्र को, जिसमें कोई पाप नहीं था, एक क्रूस के ऊपर बलिदान कर दिया, ताकि उसकी मृत्यु के द्वारा जगत के सारे लोगों के पापों का प्रायश्चित हो जाए। परन्तु आप अवश्य ही जानना चाहेंगे, कि वह परमेश्वर का पुत्र कौन था? शायद आपके मन में यह प्रश्न आए, कि क्या परमेश्वर मनुष्य है कि उसका एक पुत्र था?

मित्रो, बाइबल जिस मनुष्य को परमेश्वर का पुत्र कहकर

सम्बोधित करती है उसका नाम यीशु मसीह था। यीशु का जन्म हुए आज लगभग दो हजार वर्ष हो चुके हैं। उसका जन्म पलीस्तीन देश में एक छोटे से स्थान पर हुआ था। पृथ्वी पर मनुष्य के रूप में जन्म लेने से पहिले वह स्वर्ग में परमेश्वर के साथ वचन की नाईं था। उसके विषय में बाइबल में यों लिखा है, "आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था.....और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हमने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा।" (यूहन्ना १ : १, १४)। सो यीशु के रूप में पृथ्वी पर परमेश्वर के सामर्थी वचन ने जन्म लिया था। यीशु का जन्म आम मनुष्यों की तरह नहीं हुआ था। परन्तु उसका जन्म एक बड़े ही अनोखे और निराले ढंग से हुआ था। जिस प्रकार आरम्भ में आदम और हव्वा को परमेश्वर ने आश्चर्यकर्म करके उत्पन्न किया था। उसी प्रकार यीशु का जन्म भी परमेश्वर का एक आश्चर्यकर्म था। क्योंकि बाइबल हमें बताती है कि वह मरियम नाम की एक भक्त कन्या के द्वारा उत्पन्न हुआ था। यीशु के जन्म से पूर्व परमेश्वर के एक दूत ने मरियम को परमेश्वर का यह संदेश दिया था, कि तू पवित्रात्मा की सामर्थ से एक पुत्र को जन्म देगी; और तू उसका नाम यीशु रखना; वह परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा; और वह लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा। (मत्ती १ : १८-२५; लूका १ : २६-३८)।

इस बात को प्रमाणित करने के लिए कि वह वास्तव में परमेश्वर का पुत्र है, यीशु ने लोगों के सामने बड़े-बड़े आश्चर्यकर्म किए, जिनके बारे में आज हम बाइबल के नए नियम में पढ़ते हैं। परन्तु परमेश्वर की योजना से वह जगत में मरने के लिये आया था। उसकी मौत के द्वारा परमेश्वर जगत के पापों का प्रायश्चित करना चाहता था।

किन्तु अपनी मृत्यु से पूर्व यीशु ने एक आदर्श-पूर्ण जीवन बिताया। जिसके द्वारा वह मनुष्य को दिखाना चाहता था कि पृथ्वी पर हर एक इन्सान एक पाप-रहित जीवन व्यतीत कर सकता है। यद्यपि यीशु परमेश्वर की ओर से आया था, वह परमेश्वर का पुत्र था, किन्तु तौभी वह आपकी और मेरी तरह एक इन्सान था। उसके पास आपकी और मेरी तरह आवश्यकताएं और इच्छाएं थीं। वह आपकी और मेरी तरह लोगों के बीच में उनके साथ रहता था। परन्तु तौभी उसने कभी कोई पाप नहीं किया। पवित्र बाइबल में उसके बारे में हम एक जगह यूं पढ़ते हैं, "क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिए दुख उठाकर, तुम्हें एक आदर्श दे गया है, कि तुम भी उसके चिन्ह पर चलो। न तो उसने पाप किया, और न उसके मुंह से छल की कोई बात निकली। वह गाली सुनकर गाली नहीं देता था और दुख उठाकर किसी को भी धमकी नहीं देता था, पर अपने आपको सच्चे न्यायी के हाथ में सौंपता था।" (१ पतरस २ : २१-२३)। अर्थात् परमेश्वर के हाथ में, जो एक मात्र सच्चा न्यायी है। सो मसीह पृथ्वी पर न केवल मरने के लिए आया, परन्तु उसने पृथ्वी पर आकर एक आदर्श की स्थापना की। उसका जीवन हमारे लिए एक आदर्श है। ताकि हम उसके दिखाए हुए मार्ग पर चलें। इसीलिए वह एक जगह कहता है कि, "मार्ग, सच्चाई, और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।" (यूहन्ना १४ : ६)। मनुष्य पाप के कारण परमेश्वर से अलग है। परन्तु यीशु मनुष्य को परमेश्वर के साथ मिलाने के लिए आया। उसने अपने जीवन के द्वारा मनुष्य को वह मार्ग दिखाया जिस पर चलकर मनुष्य परमेश्वर के पास वापस लौट सकता है। वह हमारी ही तरह एक मनुष्य था, परन्तु न तो उसने कभी कोई पाप किया और न उसके मुंह से कभी छल की कोई बात निकली, वह गाली सुनकर गाली नहीं देता था और दुख उठाकर किसी को धमकी नहीं देता था। परन्तु वह अपना

भरोसा सदा परमेश्वर के ऊपर रखता था। आज मसीह के पीछे आने का, उसका अनुसरण करने का, उसके आदर्श पर चलने का ठीक यही अर्थ है। किन्तु फिर एक और जगह बाइबल में मसीह के बारे में हम यूं पढ़ते हैं, "सो जब हमारा ऐसा बड़ा महायाजक है, जो स्वर्गों से होकर गया है, अर्थात् परमेश्वर का पुत्र यीशु; तो आओ, हम अपने अंगीकार को दृढ़ता से थामे रहें। क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं, जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दुखी न हो सके; वरन वह सब बातों में हमारी नाईं परखा तो गया, तौभी निष्पाप निकला।" (इब्रानियों ४ : १४, १५)। अर्थात् यीशु ने हमारे सामने यह आदर्श रखा कि वह हमारी नाईं सब बातों में परखा तो गया लेकिन फिर भी वह निष्पाप निकला। यीशु के बारे में बाइबल में हम पढ़ते हैं, कि वह एक बड़ा ही साधारण और गरीब मनुष्य था। उसकी परवरिश एक ऐसे परिवार में हुई थी जो बहुत ही निर्धन था। संसार के दृष्टिकोण से उसके पास कुछ भी नहीं था। बहुतेरे लोग उससे बैर रखते थे, वे उसके साथ बुरा व्यवहार करते थे। परन्तु उसने न तो अपनी जुबान से और न अपने व्यवहार से कभी कोई पाप किया। कुछ लोगों ने उस पर झूठे दोष लगाए, और पकड़कर उसे सजा दिलवाने की चेष्टा की। और बाइबल में हम पढ़ते हैं कि जब वे उसे पकड़ने के लिए आए तो उसके एक चेले ने अपनी तलवार निकाल ली और उनमें से एक का कान उड़ा दिया। परन्तु यीशु ने अपने उस चेले को डांटा, और उस मनुष्य का कान छूकर उसे चंगा किया। फिर हम पढ़ते हैं, कि वे लोग यीशु को ले गए, और उन्होंने उसका बड़ा ही निरादर किया। उन्होंने उसके मुंह पर थूका, उसे थप्पड़ और घूंसे मारे, उसे गालियां दीं। परन्तु यीशु ने उनसे कुछ भी न कहा। इसके बाद उन्होंने यीशु को लकड़ी के एक क्रूस के ऊपर लिटाकर, उसकी देह को कीलों से उसके साथ ठोंक दिया, और क्रूस

को खड़ा करके उसका ठट्ठा और मज़ाक उड़ाने लगे। लेकिन बाइबल हमें बताती है, कि जब तक उस क्रूस के ऊपर लटके हुए यीशु ने अपने प्राण नहीं छोड़ दिये, तब तक वह उन सब लोगों के लिए परमेश्वर से यही प्रार्थना करता रहा, "कि पिता इन लोगों को तू क्षमा करना।" कितना ऊंचा आदर्श यीशु ने हमारे सामने रखा। फिर जीवन में उसके सामने अनेक लालच आए, बहुतेरी परीक्षाएं आईं, दुख और तकलीफ़ आए। परन्तु उसने कभी कोई पाप नहीं किया। यीशु ने ऐसा जीवन हमें यह सिखाने के लिये व्यतीत किया, कि हम भी उसकी तरह एक अच्छा और पापरहित जीवन व्यतीत कर सकते हैं। उसकी तरह हम भी प्रत्येक बुराई के ऊपर विजय प्राप्त कर सकते हैं। बाइबल में एक जगह पर हम इस प्रकार पढ़ते हैं, कि हमें चाहिए कि हम सदा "विश्वास के कर्त्ता और सिद्ध करनेवाले यीशु की ओर ताकते रहें; जिसने उस आनन्द के लिये जो उसके आगे धरा था, लज्जा की कुछ चिन्ता न करके, क्रूस का दुख सहा; और सिंहासन पर परमेश्वर के दहिने जा बैठा। इसलिए उस पर ध्यान करो, जिसने अपने विरोध में पापियों का इतना वाद-विवाद सह लिया, कि तुम निराश होकर हियाव न छोड़ दो।" (इब्रानियों १२ : २-३)। अर्थात्, यीशु हमारे विश्वास का आधार और हमारे जीवन का आदर्श होना चाहिए। प्रत्येक काम को करने से पहिले हमें अपने आप से यह सवाल पूछना चाहिए, कि यदि ऐसी परिस्थिति में मेरे स्थान पर यीशु होता, तो वह क्या करता ? क्या वह गाली देनेवाले को पलटकर गाली देता ? क्या वह अपने सतानेवालों को सताता ? क्या वह झूठ बोलता, चोरी करता, लालच करता ? क्या वह किसी की बुराई करता ? हाँ, मित्रो, हम यीशु के समान जीवन बिता सकते हैं। यदि हम प्रत्येक परिस्थिति में उसकी ओर ताकते रहें। यदि हम उसे अपने जीवन का आदर्श बना लें। प्रेरित पौलुस बाइबल में एक

स्थान पर कहता है कि, "जो मुझे सामर्थ देता है उसमें मैं सब कुछ कर सकता हूं।" (फ़िलिप्पियों ४ : १३)। हाँ, हम यीशु में एक अच्छा और विजयी और पापरहित जीवन व्यतीत कर सकते हैं।

किन्तु उस पापरहित जीवन का आरम्भ उस समय होता है, जब हम प्रभु यीशु मसीह के भीतर यह विश्वास ले आते हैं कि वह हमारे पापों के बदले में क्रूस के ऊपर परमेश्वर की इच्छा से मारा गया। जब हम यीशु को अपना प्रभु मानकर अंगीकार करते हैं। जब हम अपने सब पापों से मन फिराते हैं। और जब हम अपने सब पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेते हैं, अर्थात् यीशु की मृत्यु और उसके जी उठने की समानता में उसके साथ एक हो जाने के लिये जल के भीतर दफ़नाए जाकर उसमें से बाहर आते हैं। इस प्रकार प्रभु की आज्ञा का पालन करके हम एक नया जन्म प्राप्त करते हैं। पिछले जीवन से मुंह मोड़कर हम उस नए जीवन का आरम्भ करते हैं जिसमें यीशु मसीह हमारा आदर्श होता है, जिसके जीवन का अनुसरण करके हम अपने परमेश्वर के निकट पहुंच सकते हैं।

क्या आपके जीवन का आदर्श यीशु है ? क्या आपने उसकी आज्ञा को मानकर नया जन्म पाया है ?

परमेश्वर आपको उसके पास आने के लिये सामर्थ दे।

यीशु के चेले

मित्रो :

यह समय हमारे जीवन में एक बड़ा ही महत्वपूर्ण समय है, क्योंकि इस समय हम अपने ध्यानों को उन बातों की ओर लगाने जा रहे हैं जिनकी शिक्षा हमें पवित्र बाइबल में मिलती है। सम्पूर्ण बाइबल का मुख्य विषय यीशु मसीह, और विशेषकर, उसकी मृत्यु है। बाइबल के द्वारा परमेश्वर हमें बताता है, कि उसके दृष्टिकोण से यीशु मसीह की मृत्यु सारे जगत के लिए आवश्यक थी। यदि यीशु क्रूस के ऊपर न मरता तो मनुष्य को कभी भी उद्धार पाने की आशा न मिलती। यीशु की मृत्यु के बिना आज मनुष्य अपने पापों में खोया हुआ और आशा-रहित होता। परन्तु यीशु की मृत्यु के कारण आज मनुष्य के पास अपने पापों से मुक्ति प्राप्त करने की आशा है। क्योंकि यीशु मसीह, जिसे परमेश्वर ने स्वर्ग से पृथ्वी पर भेजा, उसकी इच्छा से जगत के पापों का प्रायश्चित करने के लिये क्रूस के ऊपर बलिदान हुआ। यीशु मसीह अपने बलिदान के कारण हमारे पापों का प्रायश्चित है। इसलिए बाइबल हम से कहती है, कि यदि आज हम यीशु मसीह में विश्वास लाएं और अपने पापों से मन फिराकर उनकी क्षमा के लिये बपतिस्मा लें, तो परमेश्वर यीशु मसीह की मृत्यु के कारण हमारे सब पापों से हमारा उद्धार करेगा। (यूहन्ना ३:१६; २ कुरिन्थियों ५ : १७; गलतियों ३:२७; रोमियों ८:१)।

किन्तु, आज हम अपने पाठ में प्रभु यीशु मसीह के चेलों के

सम्बन्ध में देखने जा रहे हैं। अपनी मृत्यु से पूर्व यीशु ने अपने लिये बारह चेलों को चुना था। उन चेलों को यीशु ने इसलिये चुना था ताकि उसके स्वर्ग पर चले जाने के बाद वे उसकी शिक्षाओं का और उसके सुसमाचार का जगत में प्रचार करेंगे। वे लोग साधारण थे, और हमारी ही तरह मनुष्य थे। जब कि हम उनके जीवनों में बड़े अच्छे-अच्छे गुण देखते हैं, दूसरी ओर हम यह भी देखते हैं कि आरम्भ में वे अपने विश्वास में कितने कमज़ोर थे। किसी ने कहा है; कि हम दूसरे लोगों की गलतियों से शिक्षा सीखते हैं। और यह सच है। न केवल हम उन चेलों की अच्छाईयों से ही सीखते हैं, परन्तु उनकी गलतियों से भी हमें शिक्षा मिलती है। सो आज हम अपने पाठ में इस सम्बन्ध में बाइबल में से एक ऐसे वर्णन को पढ़ने जा रहे हैं जिससे हमें यीशु के बारह चेलों के चरित्र की एक झलक मिलती है। यीशु के वे चेले हमारी ही तरह इन्सान थे, सो जिन गलतियों को और कमियों को हम उनके भीतर देखते हैं, वे ही गलतियां और कमियां आज हमारे भीतर भी पाई जा सकती हैं। और आज हमारे पाठ का विशेष अभिप्राय यही है कि हम उनकी गलतियों से अपने जीवनों में सबक सीखें।

बाइबल हमें बताती है, कि प्रभु यीशु को इस बात का ज्ञान था कि वह क्रूस पर चढ़ाया जाने के लिये पकड़वाया जाएगा। यहूदियों के महायाजक और पुरनिये यीशु को पकड़कर मारना चाहते थे। परन्तु वे इस बात से अज्ञान थे कि वे ऐसा करके परमेश्वर की इच्छा को पूर्ण कर रहे थे। क्योंकि यीशु को परमेश्वर ने पृथ्वी पर इसीलिये भेजा था। यीशु जगत में मरने के लिये आया था। वह जगत के पापों का प्रायश्चित करने को आया था। परन्तु क्या आप जानते हैं कि यीशु को उसके शत्रुओं के हाथों पकड़वानेवाला मनुष्य कौन था? बाइबल हमें बताती है कि वह मनुष्य स्वयं यीशु का ही एक चेला

था। उसका नाम यहूदा इस्करियोती था। यहूदा एक लालची मनुष्य था। अकसर कुछ लोग ऐसे होते हैं, जो पैसे के लालच में आकर कुछ भी करने को तैयार हो जाते हैं। यहूदा एक ऐसा ही इन्सान था। जब उसने देखा कि कुछ लोग यीशु को एकान्त में पकड़ना चाहते हैं, तो उसने उन लोगों के पास जाकर उनसे पूछा, कि यदि मैं उसे तुम्हारे हाथ पकड़वा दूं तो तुम मुझे क्या दोगे ? और बाइबल हमें बताती है, कि इस पर उन्होंने यहूदा को चांदी के तीस सिक्के दे दिये और वह उसी समय से यीशु को पकड़वाने का अवसर ढूंढ़ने लगा। और कुछ ही समय पश्चात् हम देखते हैं कि वह वक्त आया जब यहूदा ने यीशु को वास्तव में चांदी के तीस सिक्कों की खातिर उसके शत्रुओं के हाथों पकड़वा दिया। ठीक ऐसे ही आज भी यीशु के कुछ अनुयायी हैं, जो यहूदा की तरह अपने अनुचित कामों के द्वारा यीशु को पकड़वा रहे हैं। लोग उनके जीवनों को देखकर मसीह यीशु का अपमान करते हैं। लोग उनके कामों के कारण मसीह के पास आने को इंकार करते हैं। मसीह का अनुयायी एक मसीही है। एक मसीही वह मनुष्य है जिसने मसीह में अपने सारे मन से विश्वास किया है। और अपने सारे पुराने चाल-चलन और पापों से मन फिराया है। और अपने पुराने मनुष्यत्व को, मसीह की आज्ञा मानकर, बपतिस्मा लेने के द्वारा जल-रूपी-कब्र के भीतर गाड़ दिया है। (रोमियों ६:३-६) बपतिस्मे के पानी में से बाहर निकलकर वह मनुष्य एक नए मनुष्यत्व को धारण कर लेता है, जो मसीह के जीवन के आदर्श का पालन करता है। (कुलस्सियों २:१२; ३:१-१७)। परन्तु यदि कोई मनुष्य एक मसीही कहलाकर गाली देता है, या झूठ बोलता है, या चोरी करता है, या कोई अन्य ऐसा काम करता है जो मसीह की शिक्षा और उसके उपदेश और उसके स्वभाव के विरुद्ध है, तो वह यहूदा की तरह मसीह को पकड़वाता है। क्या आप एक मसीही हैं ? क्या आप यीशु मसीह के आदर्श का पालन कर रहे हैं ? क्या आप उसके बताए

हुए मार्ग पर चल रहे हैं ?

परन्तु, फिर हम बाइबल में आगे पढ़ते हैं, कि जिस दिन यहूदा यीशु को पकड़वाने जा रहा था, उसी दिन शाम को यीशु ने अपने बारह चेलों के साथ एक अंतिम भोजन खाया। और लिखा है कि भोजन के दौरान यीशु ने अपने चेलों से यों कहा, कि, "तुम सब आज ही रात को मेरे विषय में ठोकर खाओगे; क्योंकि लिखा है कि मैं चरवाहे को मारूंगा; और झुंड की भेड़ें तित्तर-बित्तर हो जाएंगी। परन्तु मैं अपने जी उठने के बाद तुमसे पहले गलील को जाऊंगा। इस पर पतरस ने उससे कहा, यदि सब तेरे विषय में ठोकर खाएं तो खाएं, परन्तु मैं कभी भी ठोकर न खाऊंगा। यीशु ने उससे कहा, मैं तुझ से सच कहता हूं, कि आज ही रात को मुर्गे के बांग देने से पहिले, तू तीन बार मुझ से मुकर जाएगा।" किन्तु, "पतरस ने उससे कहा, यदि मुझे तेरे साथ मरना भी हो, तौभी मैं तुझ से कभी न मुकरूंगा।" (मत्ती २६:३१-३५)। कितना बड़ा निश्चय इस समय हम यहाँ पतरस के भीतर देखते हैं। परन्तु वास्तव में उसका भरोसा अपने ऊपर बहुत अधिक हो गया था। क्योंकि प्रभु ने उससे कहा, कि आज ही रात को, और मुर्गे के बांग देने से पहिले, तू तीन बार मेरा इंकार करेगा। और यह बात बिल्कुल सच निकली। क्योंकि उसी रात को जब एक स्थान पर यीशु एकान्त में प्रार्थना कर रहा था तो यहूदा उसे पकड़वाने के लिये उसके शत्रुओं को लेकर वहाँ आ गया। तब यीशु ने उससे कहा, कि, "क्या तुम तलवारें और लाठियां लेकर मुझे डाकू के समान पकड़ने के लिए निकले हो ? मैं हर दिन मन्दिर में बैठकर उपदेश दिया करता था, और तुमने मुझे नहीं पकड़ा। परन्तु यह सब इसलिये हुआ है, कि भविष्यद्वक्ताओं के बचन पूरे हों।" और लिखा है, कि, "तब सब चेले उसे छोड़कर भाग गए।" (मत्ती २६:५५,५६)। और वे यीशु को पकड़कर ले गए। और लिखा है, कि जब वे यीशु को पकड़कर ले जा रहे थे तो पतरस दूर से भीड़ के पीछे-पीछे चला

आ रहा था। और जब वे यीशु को अपने महायाजक के पास ले आए तो वे उसे मारने लगे और उसका हंसी वा ठट्ठा उड़ाने लगे। किन्तु क्या आप जानते हैं कि जिस समय ये सब अत्याचार यीशु पर हो रहे थे तो उस वक्त पतरस कहां था? बाइबल में लिखा है, कि उस समय पतरस अन्य लोगों के साथ बाहर आंगन में बैठा हुआ था। और लिखा है, कि उसी समय "एक लौंडी ने उसके पास आकर कहा, तू भी यीशु गलीली के साथ था।" किन्तु, "उसने सबके सामने यह कहकर इन्कार किया और कहा, मैं नहीं जानता तू क्या कह रही है।" और फिर, "जब वह बाहर डेवढ़ी में चला गया, तो दूसरी ने उसे देखकर उन से जो वहां थे कहा, यह भी तो यीशु नासरी के साथ था।" लेकिन, "उसने शपथ खाकर फिर इंकार किया कि मैं उस मनुष्य को नहीं जानता।" और फिर हम पढ़ते हैं, कि, "थोड़ी देर के बाद, जो वहां खड़े थे, उन्होंने पतरस के पास आकर उससे कहा, सचमुच तू भी उन में से एक है; क्योंकि तेरी बोली तेरा भेद खोल देती है। तब वह धिक्कार देने और शपथ खाने लगा, कि मैं उस मनुष्य को नहीं जानता।" और तभी, "मुर्गे ने बांग दी" और "तब पतरस को यीशु की कही हुई बात स्मरण आई कि मुर्गे के बांग देने से पहिले तू तीन बार मेरा इन्कार करेगा।" और लिखा है कि पतरस "बाहर जाकर फूट-फूटकर रोने लगा।" (मत्ती २६:६९-७५)।

इस वर्णन से हम देखते हैं, कि मनुष्य अपने प्राण के भय के मारे सच्चाई से मुकर सकता है; वह परीक्षा में पड़कर अपने विश्वास से मुकर सकता है। जब वे लोग यीशु को पकड़ने आए, तो उसके सारे चेले उसे छोड़कर भाग गए। और पतरस ने तीन बार उसका इंकार कर दिया। क्या आप एक मसीही हैं? क्या आप यीशु को अपना प्रभु कहते हैं? किन्तु जब आपके सामने परीक्षाएं आती हैं, जब आपके सामने लालच आते हैं तो क्या आप अपने विश्वास पर दृढ़

बने रहते हैं ? मित्रो, मसीही जीवन एक आशीष भरा जीवन है। एक मसीही जन के पास प्रभु यीशु मसीह के बलिदान के कारण उद्धार पाने की आशा है। उनके पास स्वर्ग में प्रवेश करने की आशा है। उसके पास परमेश्वर को अपना पिता कहने का अधिकार है। किन्तु एक मसीही जन एक नया इन्सान है। और इसलिये, वह झूठ नहीं बोल सकता, वह गाली नहीं दे सकता, वह घूस नहीं ले सकता और घूस नहीं दे सकता। वह शराब नहीं पी सकता, जूआ नहीं खेल सकता, और कोई पाप नहीं कर सकता। क्योंकि ऐसे ही पाप के कामों से उसका उद्धार करने के लिये मसीह उसके बदले में क्रूस के ऊपर बलिदान हुआ था। किन्तु यदि वह ऐसे-ऐसे काम करता है तो वह अपने कामों के द्वारा मसीह से मुकर जाता है, और उसका इन्कार करता है।

मित्रो, यदि आप एक मसीही नहीं हैं तो आप को मसीही बनने की आवश्यकता है, क्योंकि एक मसीही बनने का अर्थ है यीशु मसीह के द्वारा अपने पापों से उद्धार प्राप्त करना। और यदि आप एक मसीही हैं, तो आपको चाहिए कि आप अपने जीवन से प्रत्येक उस बात को दूर कर दें जिसके कारण मसीह का अपमान होता है। अपना भरोसा अपने ऊपर नहीं रखें, परन्तु अपना भरोसा प्रभु यीशु मसीह के ऊपर रखें, और उससे प्रार्थना करें कि वह आपको शक्ति और बल दे कि आप उसके द्वारा प्रत्येक परीक्षा का सामना करके उसमें अपने विश्वास पर दृढ़ बने रहें।

पतरस

मित्रो :

पवित्र बाइबल में हम यीशु मसीह से सम्बन्धित बहुत सी बातों के बारे में पढ़ते हैं। हम यीशु के जन्म के बारे में पढ़ते हैं और उसकी मृत्यु के बारे में भी पढ़ते हैं। हम यीशु के पुनरुत्थान के सम्बन्ध में पढ़ते हैं और उसके स्वर्ग पर वापस उठा लिये जाने के बारे में भी पढ़ते हैं। बाइबल में हम यीशु के आश्चर्यकर्मों के बारे में पढ़ते हैं, और उसके जीवन और उपदेशों का वर्णन भी हमें बाइबल में मिलता है। परन्तु इससे पहिले कि यीशु उन सब कामों को करता जिन्हें करने के लिये वह स्वर्ग से पृथ्वी पर आया था, यीशु ने अपने साथ रहने के लिए बारह आदमियों को चुना था, ये लोग उसके चेले कहलाए। उन चेलों को यीशु ने आम लोगों में से चुना था, अर्थात् वे लोग आप की और मेरी तरह साधारण लोग थे। परन्तु उन बारह आदमियों को यीशु ने इस विशेष उद्देश्य से चुना था कि जब वह अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के बाद स्वर्ग पर वापस चला जाएगा तो वे सब लोगों के बीच जाकर उसके सुसमाचार का प्रचार करेंगे। यीशु ने उनसे यह प्रतिज्ञा भी की थी कि वह उनके ऊपर पवित्र आत्मा को भेजेगा जिसके द्वारा उन्हें सामर्थ मिलेगी और वे बड़े-बड़े आश्चर्य के काम कर सकेंगे, और पवित्र आत्मा उनकी अगुवाई करेगा कि वे बाइबल के नए नियम की पुस्तकों को उसकी प्रेरणा के द्वारा लिख सकेंगे। (यूहन्ना १४ : २५, २६; १६ : १२-१५; प्रेरितों १:५-८; २ : १-४; मरकुस १६ : २०)।

प्रभु यीशु के उन बारह चेलों में एक का नाम शमौन पतरस था। जिसके बारे में आज हम अपने बाइबल अध्ययन में देखने जा रहे हैं। बाइबल में एक जगह हम इस प्रकार पढ़ते हैं कि एक बार जब लोगों की एक बहुत बड़ी भीड़ यीशु के पीछे हो ली, और वे लोग जो गिनती में पाँच हज़ार से भी अधिक थे सुबह से शाम तक यीशु के साथ-साथ चलते रहे, तो यीशु को उन पर तरस आया और उसने उन सबको भोजन खिलाकर तृप्त किया। बाइबल का लेखक हमें बताता है, कि उस दिन लोगों की उस भीड़ में केवल एक ही मनुष्य के पास कुल पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ थीं। और यीशु ने उस भोजन को उस मनुष्य से लेकर उसके लिये प्रार्थना की और फिर उसने अपने चेलों से कहा कि इस भोजन को सब लोगों में बाँट दो। और वह भोजन इतना अधिक हो गया कि सब लोगों ने खा लिया और उसके बाद बचे हुए टुकड़ों की बारह टोकरियाँ उठाई गईं। इस घटना के बाद हम इस प्रकार पढ़ते हैं :

"और उसने तुरन्त अपने चेलों को बरबस नाव पर चढ़ाया, कि वे उससे पहिले पार चले जाएं, जब तक कि वह लोगों को विदा करे। वह लोगों को विदा करके, प्रार्थना करने को अलग पहाड़ पर चला गया; और साँझ को वहाँ अकेला था। उस समय नाव झील के बीच लहरों से डगमगा रही थी, क्योंकि हवा सामने की थी। और वह रात के चौथे पहर झील पर चलते हुए उनके पास आया। चेले उसको झील पर चलते हुए देखकर घबरा गए ! और कहने लगे, वह भूत है; और डर के मारे चिल्ला उठे। यीशु ने तुरन्त उनसे बातें कीं, और कहा ढाढ़स बाँधो; मैं हूं; डरो मत। पतरस ने उसको उत्तर दिया, हे प्रभु, यदि तू ही है, तो मुझे अपने पास पानी पर चलकर आने की आज्ञा दे। उसने कहा, आ : तब पतरस नाव पर से उतरकर यीशु के पास जाने को पानी पर चलने लगा। पर हवा को देखकर डर गया,

और जब डूबने लगा, तो चिल्लाकर कहा; हे प्रभु, मुझे बचा। यीशु ने तुरन्त हाथ बढ़ाकर उसे थाम लिया, और उससे कहा, हे अल्प-विश्वासी, तूने क्यों संदेह किया ? जब वे नाव पर चढ़ गए, तो हवा थम गई। इस पर जो नाव पर थे, उन्होंने उसे दण्डवत करके कहा, सचमुच तू परमेश्वर का पुत्र है।" (मत्ती १४ : २२-३३)।

यहाँ हम देखते हैं, कि प्रभु ने पतरस को एक "अल्प-विश्वासी" या एक छोटे विश्वासवाला मनुष्य कहकर सम्बोधित किया। पतरस यीशु का एक चेला था, वह यीशु में विश्वास रखता था, परन्तु उसका विश्वास उस समय बहुत छोटा था, उसका विश्वास कमज़ोर था। वह चाहता था कि प्रभु उसे पानी पर चलकर अपने पास आने की आज्ञा दे। और जब प्रभु ने उसे अपने पास आने की आज्ञा दी तो वह नाव पर से उतरकर पानी पर चलने लगा। परन्तु जब उसने तूफ़ान को देखा तो उसके मन में भय उत्पन्न हुआ और भय ने उसके मन में अविश्वास को जन्म दिया, और वह डूबने लगा।

शायद आपने बलेन्डन नाम के उस मनुष्य की कहानी सुनी होगी जिसने कैनाडा के नियागरा फ़ॉल के ऊपर एक लम्बी रस्सी बाँधकर उस पर साईकल चलाकर लोगों को आश्चर्य-चकित कर दिया था। जब बलेन्डन उस भयानक फॉल के ऊपर बधी रस्सी पर दो बार साईकल चला चुका तो देखनेवाले लोगों ने बड़े ही जोर-शोर से तालियाँ बजाकर उसका स्वागत किया। कुछ क्षण बाद बलेन्डन ने लोगों से पूछा, कि क्या आपको विश्वास है कि मैं फिर ऐसा कर सकता हूं। लोगों ने कहा, हाँ, हमें पूरा विश्वास है। इस पर उसने उनसे फिर पूछा कि क्या आप यह विश्वास करते हैं कि मैं एक आदमी को अपनी पीठ के ऊपर बैठाकर भी उस रस्सी पर साईकल चला सकता हूं ? सबने कहा, हाँ हमें विश्वास है कि आप यह काम भी कर सकते

हैं। इस पर बलेन्डन ने कहा, कि यदि आप लोगों को ऐसा विश्वास है, तो मैं चाहता हूं कि आप में से कोई एक मनुष्य मेरे पास आए ताकि मैं उसे अपनी पीठ पर बैठाकर यह काम करूं। किन्तु क्या आप जानते हैं कि कितने लोग बलेन्डन के पास आए ? एक भी नहीं। क्योंकि उनमें से कोई भी वास्तव में विश्वास नहीं करता था।

मित्रो, विश्वास वास्तव में एक बहुत बड़ी वस्तु है। हमारा सम्पूर्ण जीवन विश्वास के ऊपर आधारित है। हम उन वस्तुओं के ऊपर विश्वास करते है जिन्हें हम खाते हैं। हम उन गाड़ियों के ऊपर विश्वास करते हैं जिन पर बैठ कर हम यात्रा करते हैं। लेकिन आज हमारे सामने यह एक बड़ा ही मुख्य प्रश्न है, कि आज अपने परमेश्वर के ऊपर हमारा विश्वास किस प्रकार का है। पवित्र बाइबल में लिखा है, कि परमेश्वर ने सारे जगत का उद्धार करने के लिए अपने एकलौते पुत्र यीशु मसीह को क्रूस के ऊपर बलिदान कर दिया, ताकि जो कोई उसमें विश्वास लाए, वह नरक में नाश न हो परन्तु स्वर्ग में अनन्त जीवन पाए। (यूहन्ना ३ : १६)। बहुतेरे लोग आज यीशु में विश्वास रखते हैं। वे उसकी सामर्थ पर विश्वास रखते हैं। उनका विश्वास है कि प्रभु यीशु सब कुछ कर सकता है। ठीक ऐसा ही विश्वास उस समय पतरस का था। वह प्रभु यीशु में विश्वास करता था, वह उसकी सामर्थ पर विश्वास करता था, उसे विश्वास था कि यदि प्रभु उसे पानी पर चलकर आने की आज्ञा देगा तो वह ऐसा कर सकता है। परन्तु इससे पहिले कि वह प्रभु की आज्ञा का पालन करता वह अपने मन में उसके वचन पर संदेह करने लगा। वह संदेह करने लगा, कि ऐसा कैसे हो सकता है ? वह पानी पर क्योंकर चल सकता है ? यह बात असम्भव है। और ज्यों ही उसके मन में सदेह उत्पन्न हुआ वह डूबने लगा।

मित्रो, इस बात में आज हमें एक बहुत बड़ा पाठ मिलता है।

अर्थात् यह, कि यद्यपि यीशु हमारा उद्धार कर सकता है, वह हमें पाप में नाश होने से बचा सकता है। परन्तु तौभी हम में से बहुतेरे उसके वचन पर संदेह करने के कारण न्याय के दिन नाश हो सकते हैं। बाइबल में मरकुस की पुस्तक के सोलहवें अध्याय के सोलहवें पद में हम यूं पढ़ते हैं, कि यीशु ने कहा है, कि उसमें जो विश्वास लाएगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा। क्या आप यीशु में विश्वास रखते हैं ? मुझे आशा है कि आप उसमें विश्वास रखते हैं। परन्तु क्या आप ने बपतिस्मा लिया है ? शायद नहीं। क्योंकि आपको उसकी आज्ञा पर संदेह है। आप इस बात पर संदेह करते हैं कि पानी के भीतर गाड़े जाकर बपतिस्मा लेने के द्वारा मेरा उद्धार कैसे और क्यों कर हो सकता है। किन्तु तौभी उसी यीशु ने यह आज्ञा दी है, जिसने पतरस को पानी पर चलकर अपने पास आने की आज्ञा दी थी, कि जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा। मैं आपसे एक प्रश्न पूछना चाहता हूं, क्या आपको विश्वास है, कि यदि पतरस प्रभु की आज्ञा पर संदेह न करता तो वह पानी पर चलकर प्रभु के पास पहुंच सकता था ? सो जब कि वह प्रभु की आज्ञा को मानकर एक ऐसा असम्भव काम कर सकता था, तो क्या हम प्रभु की आज्ञा को मानकर उद्धार प्राप्त नहीं कर सकते ? "हे अल्प-विश्वासी, तूने क्यों संदेह किया ?" प्रभु ने पतरस से कहा था। और न्याय के दिन शायद हममें से बहुतेरे स्वयं अपने आप से यह प्रश्न करके कहेंगे, कि, "हे, अल्प-विश्वासी तूने क्यों संदेह किया ?"

परन्तु इससे पहिले कि हम न्याय के उस दिन में प्रवेश करें, मित्रो, आज हमारे पास यह एक बड़ा ही अच्छा अवसर है कि हम हर प्रकार के संदेह को अपने आप से दूर करें, और अपने मन में इस बात का निश्चय करें, कि जो कुछ भी प्रभु अपने वचन के द्वारा हमसे करने

को कहता है हम उसे करेंगे। यदि आप अपने सारे मन से प्रभु यीशु मसीह में विश्वास करते हैं और अपने पापों से उद्धार पाने के लिए बपतिस्मा लेना चाहते हैं, तो अभी हमारा पता एक बार फिर से आपको बताया जाएगा, उसे नोट करलें, और हमें इस सम्बन्ध में लिखकर भेजिए। इस कार्यक्रम का और हमारे प्रयत्नों का केवल एक ही उद्देश्य है, अर्थात् यह कि प्रभु की आज्ञा को मानकर सारा जगत उद्धार पाए। इसी कारण परमेश्वर का वचन यीशु मसीह बनकर इस जगत में आया, और इसीलिए उसने क्रूस के ऊपर अपने आपको बलिदान दिया।

सो प्रभु आपकी सहायता करे जबकि आप उसके पास आने के लिए उसकी आज्ञा को मानने का निश्चय करते हैं।

पौलुस

मित्रो :

आज अपने पाठ में हम एक ऐसे मनुष्य के बारे में देखने जा रहे हैं जो मसीह यीशु और उसके सुसमाचार से अपने प्राणों से भी अधिक प्रेम करता था। जगत के दृष्टिकोण से वह एक बहुत बड़ा आदमी था। वह बहुत ही पढ़ा-लिखा और बुद्धिमान मनुष्य था। धन-दौलत, शौहरत, इज्जत, उसके पास सब कुछ था। यानि जिन वस्तुओं को इन्सान प्राप्त करना चाहता है, जिन पर वह भरोसा रखता है, जिन पर उसे घमन्ड होता है, वे सारी चीजें उसके पास थीं। लेकिन बाइबल में हम एक जगह पढ़ते हैं, कि वह कहता है, "परन्तु जो-जो बातें मेरे लाभ की थीं, उन्हीं को मैंने मसीह के कारण हानि समझ लिया है। बरन मैं अपने प्रभु मसीह यीशु की पहिचान की उत्तमता के कारण सब बातों को हानि समझता हूं : जिस के कारण मैंने सब वस्तुओं की हानि उठाई, और उन्हें कूड़ा समझता हूं, जिस से मैं मसीह को प्राप्त करूं। और उस में पाया जाऊं, न कि अपनी उस धार्मिकता के साथ, जो व्यवस्था से है, बरन उस धार्मिकता के साथ जो मसीह पर विश्वास करने के कारण है, और परमेश्वर की ओर से विश्वास करने पर मिलती है। और मैं उसको और उसके मृत्युञ्जय की सामर्थ को, और उसके साथ दुखों में सहभागी होने के मर्म को जानूं, और उसकी मृत्यु की समानता को प्राप्त करूं। ताकि मैं किसी भी रीति से मरे हुओं में से जी उठने के पद तक पहुंचूं। यह मतलब नहीं, कि

मैं पा चुका हूं, या सिद्ध हो चुका हूं : पर उस पदार्थ को पकड़ने के लिये दौड़ा चला जाता हूं, जिस के लिये मसीह यीशु ने मुझे पकड़ा था। हे भाईयो, मेरी भावना यह नहीं कि मैं पकड़ चुका हूं : परन्तु केवल यह एक काम करता हूं, कि जो बातें पीछे रह गई हैं उनको भूलकर, आगे की बातों की ओर बढ़ता हुआ, निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूं, ताकि वह इनाम पाऊं, जिसके लिये परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है।" (फिलिप्पियों ३:७-१४)।

यहां हम देखते हैं, कि वह कहता है, कि सांसारिक दृष्टिकोण से जो कुछ मेरे पास था, उस सब को मैंने यीशु मसीह के कारण कूड़ा समझा ! यह बात बड़ी ही विचारपूर्ण है। मान लीजिये, किसी मनुष्य के पास दुनिया की सारी चीज़ें हैं, यानि धन-दौलत, ओहदा, इज्ज़त, प्रसिद्धि, इत्यादि। परन्तु एक दिन उसे एक ऐसी चीज़ मिल जाती है जिसके कारण वह उन सारी वस्तुओं को कूड़ा-करकट समझने लगता है। वह उस एक वस्तु के कारण उन सब वस्तुओं को व्यर्थ समझने लगता है। वह उन सारी दुनियावी चीजों को उस एक वस्तु के लिये त्याग देता है। तो आप की दृष्टि में वह वस्तु कितनी मूल्यवान हो सकती हैं ?

मित्रो, वह मनुष्य जिसने मसीह के कारण सारी वस्तुओं की हानि उठाई, और उसके कारण उन सब चीज़ों को कूड़े के समान समझा उसका नाम शाऊल या पौलुस था। परन्तु वह सदा से ऐसा नहीं था। इससे पहिले वह मसीह का हकीकत में विरोध करता था। वह जन्म से एक यहूदी था, और यहूदी धर्म को ही परमेश्वर का एक-मात्र सच्चा धर्म मानता था। परन्तु जब यरुशलेम में यीशु मसीह के चेले उसके सुसमाचार का प्रचार करने लगे और बहुतेरे लोग यीशु मसीह में विश्वास लाकर और बपतिस्मा लेकर उसके अनुयायी बनने लगे। तो पौलुस उन पर अत्याचार करने लगा, उसने उन्हें पकड़कर

जेलखानों में डलवा दिया, और उनमें से बहुतेरों को मरवा डाला। उस समय उसके जीवन का एकमात्र उद्देश्य यही था कि वह मसीहीयत का नाम-ओ-निशान इस पृथ्वी पर से मिटा डाले। किन्तु एक बड़ी ही अजीब तरह से प्रभु ने एक दिन पौलुस को पकड़ा। प्रभु ने उसके भीतर एक बहुत बड़ी विशेषता देखी, अर्थात यह, कि वह अपने धर्म के प्रति कितना अधिक जोशीला है, उसके भीतर यहूदी धर्म के प्रति कितना बड़ा विश्वास और निश्चय है। प्रभु ने पौलुस के भीतर एक ऐसे मनुष्य को देखा कि यदि वह सच्चाई को जान लेगा तो वह उसके लिये अपने प्राणों को भी कुछ न समझेगा। और वास्तव में ऐसा ही हुआ। जब पौलुस ने स्वयं मसीह को मान लिया और उसका एक अनुयायी बन गया, तो उसके क्रूस के सुसमाचार का प्रचार करने के कारण वह बन्दीग्रह में डाला गया; सताया गया और निन्दित हुआ, और अन्त में मर भी गया। जब लोग उसे पकड़कर मारते थे तो वह उन्हें यीशु का प्रचार करता था। जब वे उसे बन्दीग्रह में डालते थे तो वह उन्हें यीशु का प्रचार करता था। जब लोग उसे पकड़कर उस पर दोष लगाते थे और उसे दण्ड दिलवाने के लिये अधिकारियों के सामने लाते थे, तो वह उनके सामने भी यीशु का प्रचार करता था, और यहाँ तक कि वे कहते थे कि वह पागल हो गया है। वह लोगों के सामने अपने जीवन से मसीह की गवाही देता था। वह उन्हें बताता था कि एक समय वह भी उनके समान था; वह भी उन लोगों को पागल कहता था जो मसीह का प्रचार करते थे, वह उन्हें सताता था, क्योंकि वह उस समय सच्चाई से अनजान था। ऐसे ही एक बार जब यहूदियों ने उसे पकड़ा और उसे नाश करना चाहा तो उसने उनसे यूं कहा :

"मैं तो यहूदी हूं, जो किलकिया के तरसुस में जन्मा; परन्तु इस नगर में गमलीएल के पावों के पास बैठकर पढ़ाया गया, और बाप-दादों की व्यवस्था की ठीक रीति पर सिखाया गया; और परमेश्वर

के लिये ऐसी धुन लगाए था, जैसे तुम सब आज लगाए हो। और मैंने पुरुष और स्त्री दोनों को बान्ध-बान्धकर, और बन्दीग्रह में डाल-डाल कर, इस पंथ को यहां तक सताया, कि उन्हें मरवा भी डाला। इस बात के लिये महायाजक और सब पुरनिये गवाह हैं; कि उनमें से मैं भाइयों के नाम पर चिट्ठियां लेकर दमिश्क को चला जा रहा था, कि जो वहां हों उन्हें भी दण्ड दिलाने के लिये बान्धकर यरुशलेम में लाऊं। जब मैं चलते-चलते दमिश्क के निकट पहुंचा, तो ऐसा हुआ कि दोपहर के लगभग एकाएक एक बड़ी ज्योति आकाश से मेरे चारों ओर चमकी। और मैं भूमि पर गिर पड़ा : और यह शब्द सुना, कि हे शाऊल, हे शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है ? मैंने उत्तर दिया, कि हे प्रभु, तू कौन है ? उसने मुझसे कहा ; मैं यीशु नासरी हूं, जिसे तू सताता है। और मेरे साथियों ने ज्योति तो देखी, परन्तु जो मुझ से बोला था उसका शब्द न सुना। तब मैंने कहा; हे प्रभु मैं क्या करूं ? प्रभु ने मुझ से कहा; उठकर दमिश्क में जा, और जो कुछ तेरे करने के लिये ठहराया गया है वहां तुझ से सब कह दिया जाएगा। जब उस ज्योति के तेज के मारे मुझे कुछ दिखाई न दिया, तो मैं अपने साथियों के हाथ पकड़े हुए दमिश्क में आया। और हनन्याह नाम का व्यवस्था के अनुसार एक भक्त मनुष्य, जो वहां के रहनेवाले सब यहूदियों में सुनाम था, मेरे पास आया। और खड़े होकर मुझ से कहा; हे भाई शाऊल, फिर देखने लग : उसी घड़ी मेरे नेत्र खुल गए और मैंने उसे देखा। तब उसने कहा, हमारे बाप-दादों के परमेश्वर ने तुझे इसीलिए ठहराया है, कि तू उसकी इच्छा को जाने, और उस धर्मी को देखे, और उसके मुंह से बातें सुने। क्योंकि तू उसकी ओर से सब मनुष्यों के सामने उन बातों का गवाह होगा जो तू ने देखी और सुनी हैं। अब क्यों देर करता है ? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल।" (प्रेरितों २२:३-१६)।

मित्रो, इस प्रकार पौलुस प्रभु यीशु मसीह का एक अनुयायी बना। उसने यीशु पर विश्वास किया और अपना मन फिराया और अपने पापों को धो डालने के लिये उठकर बपतिस्मा लिया। इसके बाद पौलुस वह मनुष्य नहीं रहा जो मसीह की कलीसिया को सताता था, और जो उसके चेलों को मरवाता था। परन्तु अब वह मसीह के कारण स्वयं सताया जाता था। पहिले उसे संसार की वस्तुओं के ऊपर घमण्ड था, परन्तु अब उसका घमण्ड प्रभु यीशु और उसका क्रूस था। एक अन्य स्थान पर लिखकर वह इस तरह कहता है, "पर ऐसा न हो, कि मैं और किसी बात का घमण्ड करूं, केवल हमारे प्रभु यीशु मसीह के क्रूस का जिसके द्वारा संसार मेरी दृष्टि में और मैं संसार की दृष्टि में क्रूस पर चढ़ाया गया हूं।" (गलतियों ६:१४)। पहिले उसकी दृष्टि में मसीह के क्रूस की कथा एक मूर्खता की कथा थी, परन्तु अब उसके क्रूस की कथा पौलुस की दृष्टि में परमेश्वर की सामर्थ की कथा थी। (१ कुरिन्थियों १:१८)। कितना बड़ा परिवर्तन हम इस मनुष्य के भीतर देखते हैं। अब उसकी ज़िन्दगी का सिर्फ़ एक ही मक़सद था, उसके जीवन में केवल एक ही उद्देश्य था, उसके सामने एक ही निशाना था, जिस की ओर, वह कहता है, मैं दौड़ा चला जाता हूं, उस पदार्थ को पाने के लिए जो मुझे परमेश्वर की ओर से मिलेगा, अर्थात अनन्त जीवन। सो वह फिर लिखकर कहता है, कि, "मैं तो यही हार्दिक लालसा और आशा रखता हूं, कि मैं किसी बात में लज्जित न होऊं, पर जैसे मेरे प्रबल साहस के कारण मसीह की बड़ाई मेरी देह के द्वारा सदा होती रही है, वैसा ही अब भी हो चाहे मैं जीवित रहूं या मर जाऊं। क्योंकि मेरे लिये जीवित रहना मसीह है, और मर जाना लाभ है।" (फिलिप्पियों १:२०, २१) "क्योंकि अब मैं अर्घ की नांई उंडेला जाता हूं, और मेरे कूच का समय आ पहुंचा है। मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूं मैंने अपनी दौड़ पूरी कर ली है, मैंने विश्वास की रखवाली की है। भविष्य में मेरे लिये धर्म का

वह मुकुट रखा हुआ है, जिसे प्रभु, जो धर्मी, और न्यायी हैं, मुझे उस दिन देगा और मुझे ही नहीं, बरन उन सब को भी, जो उसके प्रगट होने को प्रिय जानते हैं।" (२ तीमुथियुस ४:६-८)।

कैसा माहन निश्चय हम पौलुस के भीतर देखते हैं। वह कहता है, कि मैं जानता हूं कि भविष्य में मेरे लिये एक मुकुट रखा हुआ है जिसे प्रभु मुझे देगा, और न केवल मुझे, पर उन सब को भी देगा जो उसके प्रगट होने को प्रिय जानते हैं। मित्रो, पवित्र बाइबल हमें बताती है, कि परमेश्वर का पुत्र यीशु मसीह जगत में लोगों का पाप से उद्धार करने के लिये आया था। उसने जगत के पापों के प्रायश्चित के लिये अपने आप को क्रूस के ऊपर बलिदान कर दिया। और जब हम उसमें विश्वास लाते हैं, उसे अपना प्रभु और उद्धारकर्ता मान लेते हैं, और अपना मन फिराकर उसकी आज्ञानुसार अपने पापों को धो डालने के लिये या पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेते हैं, तो वह हमारा, हमारे सब पापों से उद्धार करता है। तब हमारा एक नया जन्म होता है, हम एक नए जीवन को पहिन लेते हैं, जिसमें हम अपनी इच्छानुसार नहीं परन्तु मसीह की इच्छानुसार चलते हैं, अर्थात उसके बताए हुए मार्ग पर चलते हैं। परन्तु मसीह एक बार फिर प्रगट होगा। अब की बार वह न्याय करने को प्रगट होगा। क्या आप पौलुस की नांई उससे मिलने को तैयार हैं? क्या आप धर्म और अनन्त जीवन के उस मुकुट को लेने के लिये तैयार हैं जिसे प्रभु अपने लोगों को देगा? इस जीवन में आप का क्या उद्देश्य है? इस जीवन के बाद आपकी क्या आशा है?

परमेश्वर आपकी सहायता करे कि आप उसकी इच्छानुसार चलने के महत्व को समझें, और मसीह को अपना उद्धारकर्ता बनाकर उस आशा को प्राप्त करें जैसी पौलुस के पास थी।

पीलातुस

मित्रो :

एक बार फिर से इस कार्यक्रम के द्वारा आपके सम्मुख आकर आप से बातें करने के इस सुन्दर अवसर को प्राप्त करके मैं अपने आपको बड़ा ही भाग्यशाली समझता हूं। इसलिये नहीं कि मैं अपनी बड़ाई चाहता हूं, या मुझे अपनी व्यक्तिगत प्रशंसा का लोभ है। परन्तु इस कारण क्योंकि मैं आपका ध्यान इस कार्यक्रम के द्वारा उन बातों की ओर दिलाता हूं जिन्हें हमारे परमेश्वर ने हमारे लिये अपने पवित्र वचन की पुस्तक बाइबल में प्रगट किया है। यदि परमेश्वर का वचन उसकी सामर्थ से यीशु मसीह बनकर इस पृथ्वी पर न आता तो मुझे आज आपके सामने इस प्रकार आने कीकोई आवश्यकता नहीं होती। परन्तु क्योंकि आज से उन्नीस सौ वर्ष पूर्व परमेश्वर के वचन ने उसकी सामर्थ से इस पृथ्वी पर जन्म लिया। और वह उसकी इच्छा से जगत के पापों का प्रायश्चित करने के लिये एक क्रूस के ऊपर मारा गया। और जब लोगों ने उसकी लोथ को लेकर एक कब्र के भीतर गाड़ दिया। तो वह परमेश्वर की सामर्थ से तीसरे दिन फिर जी उठा। और स्वर्ग में वापस उठा लिये जाने से पहिले उसने अपने अनुयायियों को यह आज्ञा दी कि उसकी मृत्यु और जी उठने के सुसमाचार का प्रचार जगत में सब लोगों के बीच किया जाए। क्योंकि वह सारे जगत के पापों का प्रायश्चित करने के लिये बलिदान हुआ, और जो लोग अपने पापों में मरे हुए थे उन्हें जीवन देने के लिये वह फिर से जी

उठा। इसलिये आज मैं उसी सुसमाचार को लेकर आपके सम्मुख उपस्थित हूं। क्योंकि मैं चाहता हूं कि आप परमेश्वर के अनुग्रह को स्वीकार कर लें, और उस उद्धार के वारिस बन जाएं जो वह हम सबको अपने पुत्र प्रभु यीशु मसीह के भीतर देना चाहता है। बाइबल में लिखा है, मित्रो, "क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।" (रोमियों ६:२३)। इसका अर्थ यह है, कि पाप के कारण प्रत्येक मनुष्य सदा के लिये परमेश्वर से दूर होकर नरक में अनन्त दण्ड पाएगा, परन्तु यीशु मसीह में परमेश्वर के वरदान को स्वीकार करके प्रत्येक मनुष्य स्वर्ग में अनन्त जीवन पाएगा। और परमेश्वर के वरदान को स्वीकार करने के लिये बाइबल कहती है कि प्रत्येक मनुष्य को चाहिए कि वह यीशु मसीह में यह विश्वास लाए कि वह परमेश्वर का पुत्र है और वह मेरे पापों के लिये क्रूस के ऊपर मारा गया। और प्रत्येक मनुष्य अपने पापों से मन फिराए, अर्थात फिर पाप न करने का निश्चय करे। और प्रयेत्क मनुष्य अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा ले, अर्थात पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से अपने पापों की क्षमा पाने के लिये पानी के भीतर इसलिये गाड़ा जाए ताकि वह यीशु मसीह की मृत्यु और उसके गाड़े जाने और उसके जी उठने की समानता में उसके साथ एक हो जाए। और फिर बपतिस्मा लेकर पानी की कब्र में से बाहर आने के बाद, उस नए जीवन की चाल चले जिसका आदर्श हमें यीशु मसीह के जीवन में मिलता है। पवित्र बाइबल में एक जगह हम इस प्रकार पढ़ते हैं : "क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया ? सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें। क्योंकि यदि हम उसकी

मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी उसके साथ जुट जाएंगे। क्योंकि हम जानते हैं, कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए, ताकि हम आगे को पाप के दासत्व में न रहें।" (रोमियों ६ : ३-६)।

मित्रो, आज जगत में प्रत्येक मनुष्य के लिये परमेश्वर की यही योजना है। क्योंकि वह चाहता है कि सारा जगत उद्धार पाए। (यूहन्ना ३:१६; २ पतरस ३:९)। परन्तु अफ़सोस की बात यह है कि यद्यपि कि जगत को बचाने के लिए परमेश्वर ने यीशु मसीह में होकर इतना बड़ा बलिदान दे दिया, तौभी सच्चाई यह है कि सारा जगत उद्धार नहीं पाएगा। क्योंकि आज बहुतेरे लोग केवल सुननेवाले हैं, वे परमेश्वर की आज्ञा को मानने के लिये तैयार नहीं हैं। बहुतेरे लोगों के लिये परमेश्वर का सुसमाचार आज इसलिये ठोकर का कारण है क्योंकि यह बड़ा ही सरल और साधारण है। प्रेरित पौलुस बाइबल में एक जगह कहता है, "क्योंकि क्रूस की कथा नाश होनेवालों के निकट परमेश्वर की सामर्थ है।" (१ कुरिन्थियों १:१८)। किन्तु फिर आज बहुतेरे ऐसे भी लोग हैं जो परमेश्वर के सुसमाचार को इसलिये नहीं मानना चाहते क्योंकि उन्हें किसी प्रकार का कोई भय है। यह भय पारीवारिक हो सकता है और सामाजिक भी हो सकता है; यह भय किसी वस्तु को खोने का हो सकता है। परन्तु यह एक ऐसा डर है जिसके कारण वे परमेश्वर के उद्धार से बहुत दूर हैं और जिसके कारण शायद वे उस उद्धार को हमेशा के लिये खो देंगे जो वह मसीह में हम सबको देना चाहता है।

जब यीशु क्रूस के ऊपर चढ़ाया गया था तो उसके शत्रु उसे लेकर पीलातुस के पास आए थे। पीलातुस उस समय राज्य का अधिकारी

था, और यह आवश्यक था कि यीशु उसके सम्मुख दोषी ठहराया जाए। क्योंकि उसकी अनुमति के बिना वे उसे क्रूस पर नहीं चढ़ा सकते थे। और बाइबल हमें बताती है, कि जब वे लोग यीशु को लेकर पीलातुस के पास पहुंचे, "तब पीलातुस उनके पास बाहर निकल आया और कहा, तुम इस मनुष्य पर किस बात की नालिश करते हो ? उन्होंने उसको उत्तर दिया, कि यदि वह कुकर्मी न होता तो हम उसे तेरे हाथ न सौंपते। पीलातुस ने उनसे कहा, तुम ही इसे लेजाकर अपनी व्यवस्था के अनुसार इसका न्याय करो : यहूदियों ने उससे कहा, हमें अधिकार नहीं कि किसी का प्राण लें। यह इसलिए हुआ कि, यीशु की वह बात पूरी हो जो उसने यह पता देते हुए कही थी कि उसका मरना कैसा होगा। तब पीलातुस फिर किले के भीतर गया और यीशु को बुलाकर, उस से पूछा, क्या तू यहूदियों का राजा है ? यीशु ने उत्तर दिया, क्या तू यह बात अपनी ओर से कहता है या औरों ने मेरे विषय में तुझ से कही है ? पीलातुस ने उत्तर दिया, क्या मैं यहूदी हूं ? तेरी ही जाति और महायाजकों ने तुझे मेरे हाथ सौंपा, तू ने क्या किया है ? यीशु ने उत्तर दिया, कि मेरा राज्य इस जगत का नहीं, यदि मेरा राज्य इस जगत का होता, तो मेरे सेवक लड़ते, कि मैं यहूंदियों के हाथ सौंपा न जाता, परन्तु अब मेरा राज्य यहां का नहीं। पीलातुस ने उससे कहा, तो क्या तू राजा है ? यीशु ने उत्तर दिया, कि तू कहता है, क्योंकि मैं राजा हूं; मैंने इसलिये जन्म लिया, और इसलिये जगत में आया हूं कि सत्य पर गवाही दूं; जो कोई सत्य का है, वह मेरा शब्द सुनता है। पीलातुस ने उससे कहा, सत्य क्या है ? और यह कहकर वह फिर यहूंदियों के पास निकल गया और उनसे कहा, मैं तो उसमें कुछ दोष नहीं पाता। पर तुम्हारी यह रीति है कि मैं फ़सह में तुम्हारे लिये एक व्यक्ति को छोड़ दूं सो क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए यहूदियों के राजा को छोड़

दूं ? तब उन्होंने फिर चिल्लाकर कहा, इसे नहीं, परन्तु हमारे लिए बरअब्बा को छोड़ दे; और बरअब्बा डाकू था । इस पर पीलातुस ने यीशु को लेकर कोड़े लगवाए । और सिपाहियों ने कांटों का मुकुट गूंथकर उसके सिर पर रखा, और उसे बैंजनी वस्त्र पहिनाया । और उसके पास आकर कहने लगे, हे यहूदियों के राजा, प्रणाम ! और उसे थप्पड़ भी मारे । तब पीलातुस ने फिर बाहर निकलकर लोगों से कहा, देखो, मैं उसे तुम्हारे पास फिर बाहर लाता हूं; ताकि तुम जानो कि मैं कुछ भी दोष नहीं पाता । तब यीशु कांटों का मुकुट और बैंजनी वस्त्र पहने हुए बाहर निकला, और पीलातुस ने उनसे कहा, देखो, यह पुरुष । जब महायाजकों और प्यादों ने उसे देखा, तो चिल्लाकर कहा, कि उसे क्रूस पर चढ़ा, क्रूस पर : पीलातुस ने उनसे कहा, तुम ही उसे लेकर क्रूस पर चढ़ाओ; क्योंकि मैं उसमें दोष नहीं पाता । यहूदियों ने उसको उत्तर दिया, कि हमारी भी व्यवस्था है और उस व्यवस्था के अनुसार वह मारे जाने के योग्य है क्योंकि उसने अपने आपको परमेश्वर का पुत्र बनाया । जब पीलातुस ने यह बात सुनी तो और भी डर गया । और फिर किले के भीतर गया और यीशु से कहा, तू कहाँ का है ? परन्तु यीशु ने उसे कुछ भी उत्तर न दिया । पीलातुस ने उससे कहा, मुझ से क्यों नहीं बोलता ? क्या तू नहीं जानता कि तुझे छोड़ देने का अधिकार मुझे है और तुझे क्रूस पर चढ़ाने का भी मुझे अधिकार है । यीशु ने उत्तर दिया, कि यदि तुझे ऊपर से न दिया जाता, तो तेरा मुझ पर कुछ अधिकार न होता; इसलिए जिसने मुझे तेरे हाथ पकड़वाया है, उसका पाप अधिक है । इससे पीलातुस ने उसे छोड़ देना चाहा, परन्तु यहूदियों ने चिल्ला-चिल्लाकर कहा, यदि तू इसे छोड़ देगा तो तेरी भक्ति कैसर की ओर नहीं, जो कोई अपने आपको राजा बनाता है वह कैसर का सामना करता है । ये बातें सुनकर पीलातुस यीशु को बाहर लाया, और उस जगह एक चबूतरा था जो इब्रानी में गब्बता कहलाता है, और

न्याय आसन पर बैठा। यह फ़सह की तैयारी का दिन था और छटे घंटे के लगभग था : तब यहूदियों से कहा, देखो, यही है, तुम्हारा राजा ! परन्तु वे चिल्लाए, ले जा ! ले जा ! उसे क्रूस पर चढ़ा : पीलातुस ने उनसे कहा, क्या मैं तुम्हारे राजा को क्रूस पर चढ़ाऊं ? महायाजकों ने उत्तर दिया, कि कैसर को छोड़ हमारा कोई राजा नहीं। तब उसने उसे उनके हाथों सौंप दिया ताकि वह क्रूस पर चढ़ाया जाए।" (यूहन्ना १८:२९-४०; १९:१-१६)।

क्या आपने देखा ? पीलातुस ने क्रूस पर चढ़ाने के लिये यीशु को उनके हाथ इसलिये नहीं सौंप दिया क्योंकि उसने यीशु में कोई दोष पाया। परन्तु क्योंकि पीलातुस को कैसर का भय था, उसे लोगों का भय था, उसे अपने अधिकार और कुर्सी के छिन जाने का भय था। और ठीक ऐसा ही व्यवहार आज बहुतेरे लोगों का यीशु के सुसमाचार के प्रति है। वे उसके सुसमाचार में कोई दोष नहीं पाते वे उसे अपनाना चाहते हैं, परन्तु किसी डर के कारण वे उसे सुनकर टाल देते हैं। किन्तु, मित्रो, जो मनुष्य अपनी आत्मा के विशाल महत्व से परिचित हैं, जो मनुष्य स्वर्ग और अनन्त-जीवन के महत्व से परिचित हैं उसे जगत की कोई भी वस्तु यीशु के सुसमाचार को मानने से नहीं रोक सकती। प्रभु यीशु ने एक बार कहा था "क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे वह उसे खोएगा, पर जो कोई मेरे और सुसमाचार के लिये अपना प्राण खोएगा, वह उसे बचाएगा। यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा ?" (मरकुस ८:३५, ३६)।

ज़क्कई

मित्रो :

आज हम अपने पाठ में एक ऐसे मनुष्य के बारे में देखने जा रहे हैं जो देखने में तो बहुत ही छोटा था, परन्तु उसके भीतर कुछ बड़े ही अच्छे और विशाल गुण थे। उस मनुष्य का नाम ज़क्कई था। ज़क्कई के बारे में हमें बाइबल में मिलता है कि वह चुंगी लेनेवालों का सरदार था और एक बड़ा ही धनी मनुष्य था। उस समय जो लोग रोमी सरकार के लिए चुंगी लेते थे, चरित्र के दृष्टिकोण से उन्हें लोग अच्छा नहीं समझते थे। क्योंकि जो लोग चुंगी लिया करते थे वे अक्सर लोगों से नाजायज़ पैसा भी लेते थे। और ज़क्कई के बारे में हमें बाइबल बताती है कि वह चुंगी लेनेवालों का सरदार था। सो प्रत्यक्ष ही है कि ज़क्कई ने बहुत सा धन नाजायज़ तरीके से इकट्ठा किया होगा। परन्तु ज़क्कई की कहानी से आज एक बड़ा ही महत्वपूर्ण पाठ हमें यह मिलता है, कि मनुष्य चाहे कितना भी पापी वा अधर्मी क्यों न हो परन्तु यदि वह सच्चे मन से अपने पापों से फिरकर परमेश्वर के पास वापस आ जाए तो परमेश्वर उसके सब पापों से उद्धार करने को हमेशा तैयार है।

बाइबल में लूका की पुस्तक के उन्नीसवें अध्याय में हम ज़क्कई के बारे में इस प्रकार पढ़ते हैं, कि एक बार जब प्रभु यीशु यरीहो नगर की ओर से जा रहा था तो, "ज़क्कई नाम का एक मनुष्य था, जो चुंगी लेनेवालों का सरदार और धनी था। वह यीशु को देखना

चाहता था कि वह कौन सा है। परन्तु भीड़ के कारण देख न सकता था। क्योंकि वह नाटा था। तब उसको देखने के लिये वह आगे दौड़कर एक गूलर के पेड़ पर चढ़ गया, क्योंकि वह उसी मार्ग से जानेवाला था। जब यीशु उस जगह पहुंचा, तो ऊपर दृष्टि करके उससे कहा; हे जक्कई झट उतर आ, क्योंकि आज मुझे तेरे घर में रहना अवश्य है। वह तुरन्त उतरकर आनन्द से उसे अपने घर को ले गया। यह देखकर सब लोग कुड़कुड़ाकर कहने लगे, वह तो एक पापी मनुष्य के यहाँ जा उतरा है। जक्कई ने खड़े होकर प्रभु से कहा; हे प्रभु, देख, मैं अपनी आधी सम्पत्ति कंगालों को देता हूं, और यदि किसी का कुछ भी अन्याय करके ले लिया है तो उसे चौगुना फेर देता हूं। तब यीशु ने उससे कहा; आज इस घर में उद्धार आया है। इसलिये कि यह भी इब्राहीम का एक पुत्र है। क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को ढूंढ़ने और उनका उद्धार करने आया है।" (लूका १९ : १-१०)।

मित्रो, जक्कई एक नाटा आदमी था, वह कद में बड़ा ही छोटा था। परन्तु उसके मन में यीशु को देखने की जो इच्छा थी वह बड़ी ही विशाल थी। यीशु के उपदेशों को सुनकर और उसके कामों को देखकर लोगों की भीड़ उसके साथ हो लेती थी। अपने छोटे कद के कारण जक्कई यीशु को देखने में असमर्थ था। परन्तु उसने अपने मन में यीशु को देखने का निश्चय बना लिया था। सो वह दौड़कर एक पेड़ के ऊपर चढ़ गया। आज संसार में अनेक ऐसे लोग हैं जो यीशु के बारे में सुनकर उसके पास आना चाहते हैं। परन्तु भय और संकोच और पाप के कारण वे उसके पास आने में अपने आपको असमर्थ समझते हैं। क्या आप यीशु के पास आना चाहते हैं? क्या आप उसके अनुयायी बनकर स्वर्ग में अनन्त जीवन प्राप्त करना चाहते हैं? कदाचित आप ऐसा करना चाहते हैं। परन्तु शायद आपके

मन में किसी प्रकार का कोई भय है। या हो सकता है आपको यीशु के पास आने में किसी प्रकार का संकोच लगता हो। शायद पाप के कारण आप उसके पास नहीं आना चाहते। परन्तु जक्कई के जीवन से हमें आज यह पाठ मिलता है, कि यदि हम सचमुच में यीशु के पास आना चाहते हैं, यदि उसके पास आने की हमारे मन में प्रबल इच्छा है, तो हम अवश्य उसके पास आ सकते हैं। हमें जक्कई की तरह चाहिए कि हम अपनी समस्या से ऊपर उठने की कोशिश करें, हमें चाहिए कि हम जक्कई की तरह इतनी ऊंचाई पर चढ़ जाएं कि उसे देखने से हमें कोई भी वस्तु न रोक पाए। हाँ, हम यीशु के पास आ सकते हैं, हम यीशु को देख सकते हैं, हम उसे अपना प्रभु बना सकते हैं, हम उसके जीवन को अपना सकते हैं, और उसके द्वारा अपने सब पापों से उद्धार प्राप्त कर सकते हैं। यदि हम जक्कई की तरह अपनी समस्या से ऊपर उठकर ऊंचाई पर चढ़ जाएं।

परन्तु फिर हम देखते हैं, कि जब प्रभु यीशु जक्कई के साथ उसके घर में गया, तो जक्कई ने खड़े होकर प्रभु से कहा, कि हे प्रभु मैं अपनी आधी सम्पत्ति कंगालों को देने को तैयार हूं, और यदि मैंने किसी का कुछ भी अन्याय करके ले लिया है तो मैं उसे चौगुना फेर देता हूं। यहाँ जिस खास बात को हम देखते हैं वह यह है कि जक्कई प्रभु के सामने अपना मन फिराने को तैयार था। अपने जीवन भर जो कुछ उसने इकट्ठा किया था वह उसे प्रभु के कारण छोड़ने को तैयार था। वह जानता था कि वह कितना पापी मनुष्य है, वह जानता था कि उसने अन्याय करके बहुत से लोगों से नाजायज़ रुपया-पैसा इकट्ठा करके रखा था। परन्तु अब वह अपने पाप से मन फिराने को तैयार था। वह इस बात से बड़ा ही आनन्दित हुआ, कि जब कि लोग जो अपने आपको धर्मी समझते थे उसे पापी कहते थे और उसके पास नहीं आना चाहते थे, परन्तु प्रभु स्वयं उसके घर में आ गया है। वह प्रभु के प्रेम को देखकर उससे बड़ा ही प्रभावित हुआ।

सो उसने प्रभु से कहा, कि प्रभु मैं अपनी आधी सम्पत्ति कंगालों को देता हूं, और जिससे अन्याय करके मैंने कुछ ले लिया है तो उसे मैं अब चौगुना फेर देता हूं। कितना बड़ा परिवर्तन यहाँ हमें ज़क्कई के जीवन में देखने को मिलता है। पहिले वह इकट्ठा करना चाहता था, लेकिन अब वह देना चाहता है। पहिले वह लोगों पर अन्याय करता था, परन्तु अब वह उन पर दया करना चाहता था। और यीशु ने ज़क्कई के जीवन में इतना बड़ा परिवर्तन देखकर उससे कहा, कि आज इस घर में उद्धार आया है।

मित्रो, ज़क्कई का जीवन आज हमारे लिए एक बड़ा ही अच्छा उदाहरण है। वह एक बड़ा ही धनी आदमी था। किन्तु तौभी उसने अपनी आत्मा को बचाने के लिए अपने धन को त्याग दिया, अर्थात् उसने धन से अधिक अपनी आत्मा को बचाने की ओर ध्यान दिया। हममें से कितने आज ऐसे हैं जो अपनी आत्मा को बचाने के लिए कुछ त्याग करने को तैयार हैं ? मित्रो, पवित्र बाइबल में एक स्थान पर इस प्रकार लिखा है, "क्या तुम नहीं जानते, कि अन्यायी लोग परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे ? धोखा न खाओ, न वेश्यागामी, न मूर्त्तिपूजक, न परस्त्रीगामी, न लुच्चे, न पुरुषगामी। न चोर, न लोभी, न पियक्कड़, न गाली देनेवाले, न अन्धेर करनेवाले परमेश्वर के राज्य के वारिस होंगे।" (१ कुरिन्थियों ६ : ९, १०)। क्या इनमें से कोई ऐसा काम है जो आज आप के जीवन में है ? क्या आप परमेश्वर के राज्य में प्रवेश पाने के लिए उस काम को छोड़ने को तैयार हैं, उसे त्यागने को तैयार हैं, उससे मन फिराने को तैयार हैं ? परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने का अर्थ है, परमेश्वर के स्वर्ग में प्रवेश करना। अर्थात्, यदि आज आप ज़क्कई की तरह अपने प्रत्येक पाप से मन फिराएंगे, तो प्रभु का यह आश्वासन है कि वह आपको स्वर्ग में अनन्त जीवन देगा। परन्तु एक अन्य स्थान पर प्रभु यीशु के

इस प्रकार कहा था, कि यदि तुम मन नहीं फिराओगे तो तुम अपने पापों में नाश होगे। (लूका १३ : ३)। मित्रो, शायद आप जक्कई की तरह एक अन्यायी न हों। परन्तु इसमें कोई संदेह नहीं, कि आपके जीवन में कहीं न कहीं कोई न कोई ऐसी वस्तु अवश्य है जिससे आपको मन फिराने की आवश्यकता है। क्योंकि परमेश्वर जिसने मनुष्य को बनाया है और जो सबके मनों को जानता है स्वयं अपने वचन की पुस्तक में एक जगह कहता है, कि सबने पाप किया है और सब अपने-अपने पाप के कारण उससे दूर और अलग हैं। (रोमियों ३ : २३; यशायाह ५९ : १, २)। किस वस्तु के कारण आज आप परमेश्वर से अलग हैं ? कौन से पाप के कारण आज आप परमेश्वर से दूर हैं ? क्या आप उससे मन फिराकर परमेश्वर के पास आने को तैयार हैं ?

परमेश्वर आपको पाप से बचाना चाहता है। वह आपको स्वर्ग में हमेशा की जिन्दगी देना चाहता है। परन्तु वह चाहता है कि आप अपने प्रत्येक पाप से अपना मन फिराकर उसके पास आएं। पवित्र बाइबल में लिखा है, कि परमेश्वर ने मनुष्य के प्रति अपने महान् प्रेम को इस रीति से प्रकट किया कि जब कि हम सब पापी ही थे उसने अपने पुत्र यीशु मसीह को हम सबके पापों के प्रायश्चित के लिए क्रूस के ऊपर बलिदान कर दिया। यीशु मसीह परमेश्वर का सामर्थी वचन था, जिसको परमेश्वर ने हमारा उद्धार करने के लिये मनुष्य बनाकर पृथ्वी पर भेज दिया। मित्रो, परमेश्वर की यह आज्ञा है, कि प्रत्येक मनुष्य अपने पापों से उद्धार पाने के लिये प्रभु यीशु मसीह में यह विश्वास लाए कि वह मेरे पापों के बदले में क्रूस के ऊपर बलिदान हुआ, और हर एक मनुष्य अपने प्रत्येक पाप से मन फिराए, और फिर अपने पापों की क्षमा के लिए जल के भीतर बपतिस्मा ले। यानी प्रभु यीशु मसीह की मृत्यु और गाड़े जाने और जी उठने की समानता

में उसके साथ एक हो जाने के लिए जल के भीतर गाड़ा जाए और उसमें से बाहर आए। (यूहन्ना ३ : १६; रोमियों ५ : ८; मरकुस १६ : १६; प्रेरितों २ : ३८; रोमियों ६ : ३, ४, ५)।

मित्रो, मेरी आशा है, कि आप इस बात की ओर अवश्य ही ध्यान देंगे, कि पाप के कारण आप परमेश्वर से अलग हैं, परन्तु प्रभु यीशु मसीह की मृत्यु के कारण आप फिर से परमेश्वर के पास आ सकते हैं। और यह केवल तभी हो सकता है जब आप पाप से अपना मन फिराकर परमेश्वर की आज्ञा का पालन करेंगे। यदि इस सम्बन्ध में आपके मन में कोई प्रश्न है, या आप और जानकारी चाहते हैं, तो आप मुझे लिखिए। मैं आपकी सहायता करने के लिए तैयार हूं। प्रभु आप सब को अपनी आशीष दें।

———

मूर्ख धनी

मित्रो :

यदि इस जगत में कोई भी वस्तु सबसे अधिक मूल्यवान है तो वह वस्तु मनुष्य की आत्मा है। मनुष्य एक दोहरा प्राणी है, अर्थात् उसके दो व्यक्तित्व हैं, एक उसका बाहरी व्यक्तित्व है और दूसरा उसका अन्दरूनी व्यक्तित्व है। मनुष्य का बाहरी व्यक्तित्व उसका शरीर है, तथा मनुष्य का अन्दरूनी यानि भीतर का व्यक्तित्व उसकी आत्मा है। यद्धपि मनुष्य के शरीर को जलाकर राख में बदला जा सकता है। परन्तु मनुष्य की आत्मा के अस्तित्व को कोई नहीं मिटा सकता। यानि मनुष्य का शरीर नाशमान् है परन्तु उसकी आत्मा अमर है। यही कारण है, कि मैंने आपसे कहा कि मनुष्य की आत्मा जगत में सबसे अधिक मूल्यवान वस्तु है। निसंदेह, मनुष्य अपने लिए जगत में रहने के लिए बड़े-बड़े सुन्दर घर बनवा सकता है और अपने आराम के लिये बहुत सारी वस्तुऐं इकट्ठी कर सकता है। परन्तु जब उसके शरीर से उसका प्राण निकल जाता है तो उसका नाता उन सब वस्तुओं से हमेशा के लिए टूट जाता है। और फिर एक समय वह आता है जब वे सब वस्तुऐं भी जिन्हें मनुष्य ने इकट्ठा किया था या बनवाया था पुरानी होकर नाश हो जाती हैं। सो वास्तव में, हम देखते हैं, कि जगत में मनुष्य को कोई लाभ नहीं। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि हमें रहने के लिये घर नहीं चाहिए, या पहनने के लिए कपड़े नहीं चाहिए, या खाने के लिये भोजन नहीं चाहिए। ये सभी

वस्तुएं मनुष्य की आवश्यकता है। मैं रहने के लिये घर की आवश्यकता है, अपने तन को ढंकने के लिये वस्त्र की आवश्यकता है, और जिन्दा रहने के लिये भोजन की आवश्यकता है। इन वस्तुओं को प्राप्त करने के लिये परिश्रम करने में कोई बुराई नहीं है। परन्तु जब हमारी आवश्यकता हमारी इच्छा बन जाती है तो वह हमारे जीवन में बहुत सी बुराईयों को जन्म देती है। मुझे रहने के लिए एक घर चाहिए, लेकिन ज़रूरी नहीं है कि वह घर एक बहुत बड़ा आलीशान बंगला हो। मुझे पहनने के लिये कपड़े चाहिए लेकिन ज़रूरी नहीं कि वे कपड़े बड़े ही सुन्दर और कीमती हों। मुझे खाने के लिये भोजन चाहिए, लेकिन ज़रूरी नहीं कि वह भोजन बहुत ही बढ़िया और उमदा हो। रहने के लिए एक स्थान और देह के लिये भोजन वा कपड़ा मनुष्य की आवश्यकता है। परन्तु जब हमारी आवश्यकता इच्छा का रूप धारण कर लेती है, अर्थात् जब हम बड़ी-बड़ी वस्तुओं की इच्छा करने लगते हैं और उन्हें प्राप्त करने की लालसा करने लगते हैं, तो अपनी इच्छाओं की पूर्ती के लिये हम अनेक ऐसे काम करने लगते हैं जो हमारे विनाश का कारण बनते हैं। जहाँ तक मनुष्य की आवश्यकता का प्रश्न है, जो कुछ उसके पास है वह उसकी आवश्यकता के लिये प्रार्याप्त है। परन्तु मनुष्य को संतोष नहीं है। एक बार प्रभु यीशु ने शिक्षा देकर इस प्रकार कहा था :

"कि अपने प्राण के लिये यह चिन्ता न करना कि हम क्या खाएंगे ? और क्या पीयेंगे ? और न अपने शरीर के लिये कि क्या पहिनेंगे ? क्या प्राण भोजन से और शरीर वस्त्र से बढ़कर नहीं ? आकाश के पक्षियों को देखो ! वे न बोते हैं, न काटते हैं, और न खत्तों में बटोरते हैं, तौभी तुम्हारा स्वर्गीय पिता उनको खिलाता है; क्या तुम उनसे अधिक मूल्य नहीं रखते ?" (मत्ती ६:२५-२६)।

सो परमेश्वर को हमारी आवश्यकता का ध्यान है, वह हमारी

आवश्यकता को पूरा करता है । परन्तु हम अपनी आवश्यकता से आगे बढ़ जाते हैं। हम उन वस्तुओं की इच्छा और लालसा करने लगते हैं जो हमारे पास नहीं हैं। मनुष्य अपनी इच्छा को पूरा करने के लिये प्रत्येक वह काम करता है जिसका परिणाम पाप होता है। वह झूठ बोलता है, घूस देता और घूस लेता है, वह चोरी करता है; डाके डालता है, और यदि अपनी इच्छा को पूरा करने के लिये उसे किसी की हत्या भी करनी पड़े तो वह उससे भी नहीं रुकता। अभी कुछ ही समय पूर्व भारत की राजधानी दिल्ली में कुछ ही दिनों के भीतर कई एक बैंक लूट लिये गए। लेकिन बाद में जब उन लुटेरों को पकड़ा गया, तो पता चला कि वे बड़े-बड़े धनी घरों के लड़के थे। उनके घरवालों ने बताया कि उन्हें अपने घर में किसी भी चीज़ की कमी नहीं थी। लेकिन फिर भी उन्होंने डाके डाले। क्यों ? क्योंकि उन्हें अपनी आवश्यकताओं की पूर्ती से ही संतुष्टी नहीं थी, वे अपनी इच्छाओं को पूरा करना चाहते थे। और मित्रो, मनुष्य की इच्छा एक ऐसी वस्तु है जो कभी पूरी नहीं होती । अपनी इच्छाओं के वश में आकर मनुष्य अपनी इच्छा का गुलाम बन जाता है। वह अपनी इच्छाओं की पूर्ती के लिये धन कमाने में इतना अधिक लीन हो जाता है, कि फिर उसे अपनी आत्मा को बचाने की कोई चिन्ता नहीं रहती। उसे परमेश्वर की कोई चिन्ता नहीं रहती। क्योंकि उस मनुष्य का ईश्वर और सब कुछ उसका पैसा होता है। वह भूल जाता है, कि इससे पहिले कि जिन वस्तुओं को उसने अपनी इच्छा की पूर्ती के लिये इकट्ठा किया है वे उसके किसी काम आएं, वह इस संसार से चला जाएगा।

इसी महत्वपूर्ण बात को सिखाने के लिये प्रभु यीशु ने एक बार कहा था, कि, "चौकस रहो, और हर प्रकार के लोभ से अपने आप को बचाए रखो : क्योंकि किसी का जीवन उसकी सम्पत्ति की बहुतायत

से नहीं होता।" और फिर अपनी बात को और अधिक स्पष्ट करने के दृष्टिकोण से यीशु ने एक दृष्टान्त देकर इस प्रकार कहा "कि किसी धनवान की भूमि में बड़ी उपज हुई। तब वह अपने मन में बिचार करने लगा, कि मैं क्या करूं, क्योंकि मेरे यहाँ जगह नहीं, जहाँ अपनी उपज इत्यादि रखूं। और उसने कहा; मैं यह करूंगा: मैं अपनी बखारियाँ तोड़कर उनसे बड़ी बनवाऊंगा; और वहाँ अपना सब अन्न और सम्पत्ति रखूंगा: और अपने प्राण से कहूंगा, कि प्राण, तेरे पास बहुत बर्षों के लिये बहुत सम्पत्ति रखी है; चैन कर, खा, पी, सुख से रह। परन्तु परमेश्वर ने उस से कहा; हे मूर्ख, इसी रात तेरा प्राण तुझ से ले लिया जाएगा: तब जो कुछ तूने इकट्ठा किया है, वह किसका होगा?" और यीशु ने कहा कि, "ऐसा ही वह मनुष्य भी है जो अपने लिये धन बटोरता है, परन्तु परमेश्वर की दृष्टि में धनी नहीं।" (लूका १२:१५-२१)।

यहाँ यीशु ने हमारे सामने एक ऐसे मनुष्य का चित्र रखा है जो हम में से कोई भी हो सकता है। आज आप किस वस्तु को प्राप्त करने की होड़ में लगे हुए हैं? क्या वह पैसा है? क्या वह वस्तु कोई ओहदा या कला है? क्या वह विद्या या ख्याति है? किस चीज़ को हासिल करने के लिये आज आप अपना सारा समय और अपनी सारी ताकत लगा रहे हैं? आप अपने जीवन के लिये आज किस वस्तु को बटोर रहे हैं, आप क्या इकट्ठा कर रहे हैं? क्या आप परमेश्वर के ये शब्द सुनने के लिये तैयार हैं, कि इसी रात तेरा प्राण तुझ से ले लिया जाएगा: तब जो कुछ तूने इकट्ठा किया है, वह किसका होगा? अभी जिस मनुष्य के दृष्टान्त को हमने यीशु के शब्दों में सुना, हम देखते हैं, कि वह मनुष्य परमेश्वर के पास जाने के लिये तैयार नहीं था। क्या आप तैयार हैं? हम देखते हैं, कि परमेश्वर ने उसे एक मूर्ख कहकर सम्बोधित किया। क्योंकि उसने इतना सब कुछ इकट्ठा

किया, तौभी वह उसके किसी काम का न रहा। किन्तु जिस वस्तु को वह बचा सकता था और जिसे उसे बचाना चाहिए था, अर्थात् अपनी आत्मा को, उसे उसने खो दिया। अपने जीवन में उसने इस बात पर कोई ध्यान नहीं दिया कि देह के अतिरिक्त उसके पास एक आत्मा भी है। उसने इस बात की ओर कोई ध्यान नहीं दिया, कि जब वह अपनी देह को छोड़कर इस संसार से चला जाएगा तो वह कहाँ जाएगा। उसने अपने जीवन में परमेश्वर की ओर कोई ध्यान नहीं दिया, उसकी इच्छा को जानने की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। क्योंकि वह हर समय इकट्ठा करने और बटोरने में व्यस्त था।

मित्रो, आप आज किस प्रकार का जीवन व्यतीत कर रहे हैं? किस वस्तु को आप अपने जीवन में सबसे अधिक महत्त्व दे रहे हैं? अपनी देह को या अपनी आत्मा को? क्या आपने कभी अपनी आत्मा के विशाल महत्त्व को समझने की ओर ध्यान दिया है? क्या आपने कभी इस प्रश्न के ऊपर विचार किया है, कि जब आप अपनी देह को छोड़कर इस संसार से चले जाएंगे तो आप कहाँ जायेंगे? इससे कुछ अन्तर नहीं पड़ता कि आपके पास कितनी ताकत है, कितना धन है, कितनी विद्या और कला है। यदि मनुष्य जगत की सारी वस्तुओं को प्राप्त कर ले, प्रभु यीशु ने कहा, परन्तु अपनी आत्मा की हानि उठाए तो उसे क्या लाभ होगा? (मत्ती १६:२६)। मित्रो, जगत में सबसे महत्त्वपूर्ण वस्तु आपकी आत्मा है। और पाप के कारण मनुष्य परमेश्वर से अलग है, उससे दूर है, और उसके स्वर्ग में रहने के योग्य नहीं है। परन्तु क्या आप चाहते हैं कि जब आप अपनी देह को इस संसार में छोड़कर अनन्तकाल में चले जाएं तो आपकी आत्मा का अनन्त निवास-स्थान परमेश्वर का स्वर्ग हो? मित्रो, पवित्र बाइबल में लिखा है, कि परमेश्वर ने सारे जगत से ऐसा प्रेम रखा कि सारे जगत को पाप के भयंकर परिणाम से बचाने के लिये उसने अपने

एकलोते पुत्र यीशु मसीह को हम सब के पापों के प्रायश्चित के लिये बलिदान कर दिया। बाइबल हमें बताती है कि परमेश्वर यीशु मसीह में होकर हम सब के साथ अपना मेल करना चाहता है, ताकि हम जब इस नाशमान संसार को छोड़कर अनन्तकाल में जाएं तो हम उसके स्वर्ग में प्रवेश करके उसके साथ अनन्त जीवन पाएं। क्या आप प्रभु यीशु मसीह में विश्वास करते हैं? पवित्र बाइबल में लिखा है, कि जो लोग यीशु में विश्वास लाते हैं उन्हें चाहिए कि वे पाप से अपना मन फिराएं और अपने पापों की क्षमा के लिये जल के भीतर बपतिस्मा लें। (मरकुस १६:१६; प्रेरितों २:३८; ८:३५-३९; रोमियों ६:३-५)।

मेरी आशा है, मित्रो, कि आप इस गम्भीर बात की ओर ध्यान देंगे। और अपनी देह से भी अधिक अपनी आत्मा की चिन्ता करेंगे। और परमेश्वर की इच्छा पर चलकर अपनी आत्मा को पाप के भयंकर परिणाम से बचाएंगे।

———

उड़ाऊ पुत्र

मित्रो :

मानवता के सम्पूर्ण इतिहास में मनुष्य इतना अधिक भयभीत होकर कभी नहीं रहा जैसे कि वह आज रह रहा है। लड़ाईयों की चर्चा सुनाई दे रही है, विश्व-युद्ध का भय मनुष्य पर बढ़ता जा रहा है। डकैतियों की सनसनीखेज घटनाएं और प्रतिदिन की नई-नई दुर्घटनाएं मनुष्य को भय से भयभीत कर रही हैं। परन्तु मित्रो, मनुष्य को सबसे अधिक इस संसार में जिस वस्तु से डरना चाहिए वह वस्तु है पाप। क्योंकि संसार में कोई ऐसा हथियार नहीं है, और कोई ऐसी वस्तु नहीं है और कोई ऐसी शक्ति नहीं है जो मनुष्य की आत्मा को नाश कर सके। कोई मेरे शरीर को मार सकता है, उसके टुकड़े-टुकड़े कर सकता है, उसे जला सकता है और ज़मीन में गाड़ सकता है। परन्तु मेरी आत्मा को, मेरे वास्तविक मनुष्य को कोई नहीं मार सकता। उसे कोई जला नहीं सकता, गाड़ नहीं सकता। लेकिन तौभी पाप एक ऐसी वस्तु है जिसके भीतर मनुष्य की आत्मा को नाश करने की शक्ति है। पाप का अर्थ है, परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करना, उसके बताए हुए मार्ग के विरुद्ध चलना। (१ यूहन्ना ३ : ४)। पवित्र बाइबल में लिखा है, कि जगत में सारे लोगों ने पाप किया है। (रोमियों ३ : १०-१८)। और पाप की मजदूरी अर्थात् उसका परिणाम मृत्यु है। यह मृत्यु आत्मिक मृत्यु है। मृत्यु का अर्थ है समाप्त होना या अलग होना। यानि पाप के कारण प्रत्येक मनुष्य

आत्मिक दृष्टिकोण से मरा हुआ है, परमेश्वर के साथ उसकी संगति खत्म हो चुकी है, वह परमेश्वर से दूर और अलग हो गया है । इस कारण पाप एक बड़ी ही भयानक वस्तु है ।

अक्सर जब हम पाप का नाम लेते हैं तो हम पाप को केवल चोरी, डकैती आदि शरीर के कामों तक ही सीमित करके उसके ऊपर विचार करते हैं । परन्तु पाप केवल ऐसे-ऐसे कामों तक ही सीमित नहीं हैं । क्योंकि बहुतेरे लोग आज अपने अंधविश्वास के कारण धार्मिक रूप से भी पाप कर रहे हैं । हम सबका केवल एक ही परमेश्वर है । और उसने हम सबको अपनी केवल एक ही इच्छा पर चलने की आज्ञा दी है । परन्तु अनेक लोग आज धार्मिक दृष्टिकोण से अपने मन की अनर्थ रीति पर चल रहे हैं । और इस प्रकार अनेक धर्मों और मार्गों पर चलने के द्वारा मनुष्य ने परमेश्वर की सच्चाई को अपने झूठे विचारों तथा आडम्बरों के नीचे दबा रखा है । पवित्र बाइबल में एक जगह इस प्रकार लिखा है : "परमेश्वर का क्रोध तो उन लोगों की सब अभक्ति और अधर्म पर स्वर्ग से प्रगट होता है, जो सत्य को अधर्म से दबाए रखते हैं । इसलिए कि परमेश्वर के विषय का ज्ञान उनके मनों में प्रगट है, क्योंकि परमेश्वर ने उन पर प्रगट किया है । क्योंकि उसके अनदेखे गुण, अर्थात् उसकी सनातन सामर्थ, और परमेश्वरत्व जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं, यहाँ तक कि वे निरुत्तर हैं । इस कारण कि परमेश्वर को जानने पर भी उन्होंने परमेश्वर के योग्य बड़ाई और धन्यवाद न किया, परन्तु व्यर्थ विचार करने लगे, यहाँ तक कि उनका निर्बुद्धि मन अंधेरा हो गया । वे अपने आपको बुद्धिमान जताकर मूर्ख बन गए । और अविनाशी परमेश्वर की महिमा को नाशमान मनुष्य, और पक्षियों, और चौपायों, और रेंगनेवाले जन्तुओं की मूरत की समानता में बदल डाला ।" (रोमियों १ : १८-२३) । इस प्रकार, मित्रो, आत्मिक दृष्टिकोण से आज लाखों लोग परमेश्वर के धर्म को अपने अधर्म से

दबा रहे हैं; और उसकी सच्चाई को, जो प्रगट है, अपने झूठे तथा मिथ्या विचारों से बिगाड़ रहे हैं। और यह पाप है। और प्रत्येक पाप की मजदूरी अर्थात् उसका परिणाम आत्मिक मृत्यु है। जिसका अर्थ यह है कि पाप के कारण मनुष्य परमेश्वर से इस जीवन में अलग है। और यदि मनुष्य अपना मन पाप से फिराकर सच्चे परमेश्वर के पास वापस नहीं लौट आता, तो शारीरिक मृत्यु के बाद वह हमेशा के लिए परमेश्वर से दूर और अलग रहेगा। और जिस जगह वह अनन्त-काल तक रहेगा उसका नाम नरक है, और बाइबल में लिखा है कि वह एक ऐसी झील है जो सदा आग और गन्धक से जलती रहती है। परमेश्वर के वचन की पुस्तक में हम इस प्रकार पढ़ते हैं, कि, "डरपोकों, और अविश्वासियों, और घिनौनों, और हत्यारों, और व्यभिचारियों, और टोन्हों, और मूर्त्तिपूजकों, और सब झूठों का भाग उस झील में मिलेगा, जो आग और गन्धक से जलती रहती है : यह दूसरी मृत्यु है।" (प्रकाशितवाक्य २१ : ८)। अर्थात् अभी मनुष्य अपने पाप के कारण परमेश्वर से अलग है, परन्तु वह अपने पाप से मन फिराकर उसके पास वापस आ सकता है। इस जीवन में उसके पास आशा है, कि वह परमेश्वर की आज्ञा को मानकर फिर से अनन्त जीवन प्राप्त कर सकता है। परन्तु यदि वह अपने इस जीवन में इस बात पर कोई ध्यान नहीं देता है; यदि वह अपना मन फिराकर उसके पास वापस लौट आने का निश्चय नहीं करता है, यदि वह अपने वर्तमान जीवन में परमेश्वर के उद्धार और अनुग्रह को ठुकरा देता है, तो उसका भाग उसे आग और गंधक की उस झील में मिलेगा जो दूसरी तथा अन्तिम और अनन्त-काल की मृत्यु है।

मित्रो, आज मैं आपके सामने जिस विषय पर विचार कर रहा हूं, यदि आज पाप संसार में न होता, तो मुझे आपके सामने इन बातों को रखने की कोई आवश्यकता न होती। यदि पाप संसार में न होता

तो हमें परमेश्वर की बाइबल की कोई आवश्यकता नहीं होती। और यदि पाप संसार में न होता, तो परमेश्वर के वचन को मनुष्य बनकर इस जगत में आने की कोई आवश्यकता न होती। परन्तु पाप जगत में हैं, और पाप के कारण मृत्यु है। इसी कारण परमेश्वर ने मनुष्य को बाइबल दी है ताकि मनुष्य जाने कि वह पाप में है। इसी कारण परमेश्वर के वचन को यीशु मसीह बनकर पृथ्वी पर आना पड़ा, ताकि क्रूस के ऊपर उसके बलिदान के कारण सारा जगत पाप से छुटकारा प्राप्त करके परमेश्वर के पास वापस लौट आए। और इसीलिए आज मैं आपके सम्मुख इस बात का प्रचार कर रहा हूं कि आप अपने आपको पाप से बचाएं, और पाप से छुटकारा प्राप्त करके इसी जीवन में अपना मेल परमेश्वर के साथ कर लें।

जब प्रभु यीशु इस पृथ्वी पर था, तो उसने साढ़े तीन वर्ष तक निरन्तर लोगों के बीच इस बात का प्रचार किया था कि वे अपना मन फिराकर परमेश्वर के पास वापस लौट आएं। और इस सम्बन्ध में यीशु ने लोगों के सामने एक बड़ा ही अच्छा दृष्टांत भी रखा, और मैं समझता हूं कि यीशु के इस दृष्टांत को यदि आज हम सुनकर अच्छी तरह समझ लें, तो यह बात हमारे सामने बिल्कुल स्पष्ट हो जाएगी, कि पाप मनुष्य को कितना अपमान-जनक बना देता है। किन्तु यदि पापी मनुष्य पाप से अपना मन फिराकर परमेश्वर के पास वापस लौट आए, तो परमेश्वर उसे स्वीकार करने और नया जीवन देने के लिए हमेशा तैयार है। प्रभु यीशु ने कहा कि, "किसी मनुष्य के दो पुत्र थे। उनमें से छुटके ने पिता से कहा कि हे पिता संपत्ति में से जो भाग मेरा हो, वह मुझे दे दीजिए। उसने उनको अपनी संपत्ति बाँट दी। और बहुत दिन न बीते थे कि छुटका पुत्र सब कुछ इकट्ठा करके एक दूर देश को चला गया, और वहाँ कुकर्म में अपनी संपत्ति उड़ा दी। जब वह सब कुछ खर्च कर चुका, तो उस देश में बड़ा

अकाल पड़ा, और वह कंगाल हो गया । और वह उस देश के निवासियों में से एक के यहाँ जा पड़ा : उसने उसे अपने खेतों में सूअर चराने के लिए भेजा । और वह चाहता था कि उन फलियों से जिन्हें सूअर खाते थे अपना पेट भरे; और उसे कोई कुछ नहीं देता था ।" परन्तु, "जब वह अपने आपे में आया तब कहने लगा, कि मेरे पिता के कितने ही मजदूरों को भोजन से अधिक रोटी मिलती है, और मैं यहाँ भूखा मर रहा हूं ।" तब उसने कहा, "मैं अब उठकर अपने पिता के पास जाऊंगा और उससे कहूंगा कि पिता जी मैंने स्वर्ग के विरोध में और तेरी दृष्टि में पाप किया है । अब इस योग्य नहीं रहा कि तेरा पुत्र कहलाऊं, मुझे अपने एक मजदूर की नाईं रख ले ।" और, "तब वह उठकर अपने पिता के पास चला" किन्तु "वह अभी दूर ही था, कि उसके पिता ने उसे देखकर तरस खाया, और दौड़कर उसे गले लगाया, और बहुत चूमा । पुत्र ने उससे कहा; पिताजी, मैंने स्वर्ग के विरोध में और तेरी दृष्टि में पाप किया है; और अब इस योग्य नहीं रहा कि तेरा पुत्र कहलाऊं । परन्तु पिता ने अपने दासों से कहा; झट अच्छे से अच्छा वस्त्र निकाल कर उसे पहिनाओ, और उसके हाथ में अंगूठी, और पांवों में जूतियाँ पहिनाओ, और पला हुआ बछड़ा लाकर मारो ताकि हम खाएं और आनन्द मनाएं । क्योंकि मेरा यह पुत्र मर गया था, फिर जी गया है : खो गया था, अब मिल गया है : और वे आनन्द करने लगे ।" (लूका १५ : ११-२४) ।

मित्रो, क्या आप पाप में नाश होने से बचना चाहते हैं ? आपको चाहिए कि आप पाप के भयंकर परिणाम के ऊपर ध्यान दें । पाप के भीतर आप उस उड़ाऊ पुत्र की तरह नाश हो रहे हैं । परन्तु परमेश्वर आपको बचाना चाहता है । वह एक प्रेमी पिता की नाईं हाथ फैलाए आज भी खड़ा हुआ है आपको स्वीकार करने के लिये

क्या आप उस खोए हुए पुत्र की नाईं अपना मन फिराकर उसके पास आने को तैयार हैं ? सोचिए कि प्रेमी परमेश्वर ने पाप से मनुष्य का उद्धार करने के लिए कितना बड़ा बलिदान दिया। उसने हमारे पापों का प्रायश्चित करने के लिए अपने पुत्र यीशु को क्रूस के ऊपर बलिदान कर दिया। और पवित्र बाइबल में लिखा है कि जो मनुष्य यीशु मसीह में विश्वास लाकर बपतिस्मा लेगा परमेश्वर पाप से उस मनुष्य का उद्धार करेगा। बपतिस्मा लेने के द्वारा मनुष्य यीशु मसीह की मृत्यु और उसके गाड़े जाने और उसके जी उठने की समानता में उसके साथ एक हो जाता है। क्योंकि बपतिस्मे के द्वारा मनुष्य पाप के लिए मरके जल के भीतर गाड़ा जाता है और उसमें से बाहर आता है। (रोमियों ६ : १-६)।

मित्रो, मेरी आशा है कि इन महत्वपूर्ण बातों के ऊपर न केवल आप विचार ही करेंगे परन्तु परमेश्वर की आज्ञा को मानकर, आप उसके साथ अपना मेल भी करेंगे। यदि इन बातों के सम्बन्ध में मैं आपकी कोई सहायता कर सकता हूं, तो मैं आपकी सेवा में हूं। परमेश्वर का अनुग्रह आप सब पर बना रहे।

धनी सरदार

मित्रो :

इस समय मैं आपका ध्यान कुछ बड़ी ही आवश्यक बातों के ऊपर दिलाना चाहता हूं। मैं जानता हूं कि इस समय आप में से कुछ लोग कोई गीत सुनने के इच्छुक होंगे, कुछ लोग शायद कोई अच्छा मनोरंजन का कार्यक्रम सुनना चाहते होंगे। लेकिन मैं किसी भी ऐसी चीज को आपके सामने रखने नहीं जा रहा हूं। किन्तु जिन बातों को मैं आपके सामने अब रखने जा रहा हूं वे इन सब बातों से बड़ी ही अधिक गम्भीर और बड़ी ही ज्यादा महत्त्वपूर्ण बातें हैं। मैं आपका ध्यान ऐसी गम्भीर बातों के ऊपर दिलाने जा रहा हूं जिनका सम्बन्ध आपके भीतरी मनुष्यत्व अर्थात् आपकी आत्मा से है। इसमें कोई संदेह नहीं कि जगत की वस्तुएं आपका मनोरंजन कर सकती हैं, और आपको कुछ समय का आनन्द और खुशी दे सकती हैं। परन्तु सम्पूर्ण जगत में कोई ऐसी वस्तु नहीं है जो आपकी आत्मा को पाप में नाश होने से बचा सके। क्या आप गम्भीरता के साथ सुन रहे हैं? आज आप जीवित हैं, आपके शरीर में खून दौड़ रहा है, आप भविष्य के लिये योजनाएं बना रहे हैं। आपको अपनी चिन्ता है, आप को अपने परिवार की चिन्ता है। परन्तु आप चाहे जो कुछ भी कर लें आप अपने जीवन में प्रत्येक दिन और प्रत्येक क्षण उस समय के नज़दीक आते जा रहे हैं जब आप इस संसार से हमेशा के लिये चले जाएंगे। क्या आप जानते हैं कि आप कहां जाएंगे? आपकी आत्मा का अनन्त

अनन्त-निवास-स्थान कहां होगा ? मित्रो, यह प्रश्न एक बड़ा ही विशाल प्रश्न है। क्योंकि मृत्यु एक ऐसी सच्चाई है जिससे कोई मनुष्य नहीं बच सकता। और क्योंकि मृत्यु एक सच्चाई है, इसलिये यह भी एक सच्चाई है कि प्रत्येक आत्मा शरीर से अलग होकर उस अनन्तकाल में प्रवेश करेगी जहां से कभी कोई वापस नहीं आता। प्रभु यीशु ने एक बार कहा था कि वहां अधर्मी अनन्त दन्ड भोगेंगे और धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे। (मत्ती २५:४६)। सो प्रभु यीशु के कथनानुसार वहां केवल दो ही प्रकार के लोग होगे—एक अधर्मी और दूसरे धर्मी। वहां काले-गोरे, ऊंचे-नीचे, हिन्दुस्तानी और चीनी लोग नहीं होंगे। परन्तु वहां केवल दो ही तरह के लोग होंगे, अर्थात् अधर्मी और धर्मी। और फिर हम यह भी देखते हैं कि वे दोनों ही प्रकार के लोग एक ऐसे स्थान पर जाएंगे जो अनन्त अर्थात् हमेशा का होगा। इस पृथ्वी पर रहते हुए हम एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा सकते हैं। परन्तु उस अनन्तकाल में जहां आप प्रवेश करेंगे वही आपका हमेशा का ठिकाना होगा। एक बार जब आप वहां पहुंच जाएंगे तो आप हमेशा के लिये उसी में रहेंगे। (लूका १६:२६)। यही कारण है कि प्रभु यीशु ने कहा था कि अधर्मी अनन्त दण्ड भोगेंगे और धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे। इसलिये यदि आज आपके सामने कोई एक बड़ा ही महत्वपूर्ण प्रश्न है, यदि आज मेरे सामने कोई एक बड़ा ही खास सवाल है, तो वह यह है कि मैं अनन्त जीवन में प्रवेश पाने के लिये क्या करूं ?

अकसर कुछ लोग सोचते हैं, कि यदि उनके पास अच्छी सेहत हैं और उनके पास एक अच्छा काम है, वे अच्छे ओहदे पर हैं, और उनके पास बहुत सा धन है तो उनके पास सब कुछ है। और यदि इनमें से कोई वस्तु किसी मनुष्य के पास नहीं है तो वह उसे प्राप्त करने के लिये परिश्रम कर रहा है। अर्थात् मनुष्य अपने जीवन की सफलता

का भेद इन वस्तुओं को समझता है। परन्तु परमेश्वर अपने वचन की पुस्तक बाइबल में ऐसे मनुष्य को सम्बोधित करके कहता है कि वह एक बहुत बड़ा मूर्ख मनुष्य है। क्योंकि जब उस मनुष्य का प्राण ले लिया जाएगा, जब उसकी मृत्यु हो जाएगी, जब वह इस नाशमान संसार को छोड़कर अनन्तकाल में प्रवेश करेगा तो जो कुछ वह इकट्ठा करेगा वह सब किसका होगा। यही कारण है कि एक बार प्रभु यीशु ने चेतावनी देकर कहा था, कि चौकस रहो, और हर प्रकार के लोभ से अपने आप को बचाए रखो : क्योंकि किसी का जीवन उसकी सम्पत्ति की बहुतायत से नहीं होता। (लूका १२:१३-२१)।

परन्तु, फिर कुछ ऐसे भी लोग हमारे इस संसार में हैं जो अपने धर्म के कामों के ऊपर अपना भरोसा रखते हैं। वे एक अच्छा नैतिक जीवन व्यतीत करना चाहते हैं, और सोचते हैं कि अपने अच्छे कामों के कारण वे अनन्त के जीवन में प्रवेश करेंगे। परन्तु क्या मनुष्य के अच्छे काम उसके बुरे कामों पर परदा डाल सकते हैं? मान लीजिए, यदि कोई मनुष्य केवल दो झूठ बोलता है और पन्द्रह जगह सच बोलता है, क्या उसकी पन्द्रह बातें उसके दो झूठ पर परदा डाल सकती हैं? मान लीजिये, यदि कोई मनुष्य केवल दो कत्ल करता है, और बाद में बहुत से लोगों की जान बचा लेता है, क्या इसका मतलब यह हो जाएगा कि वह कातिल नहीं है? जो लोग अपने अच्छे कामों के कारण अनन्त-जीवन में प्रवेश करना चाहते हैं, वे यह भूल जाते हैं कि वे अपने कामों के द्वारा कभी भी एक ऐसा पाप-रहित तथा सिद्ध जीवन व्यतीत नहीं कर सकते जो परमेश्वर की इच्छानुसार और उसके समान हो। या कौन सा ऐसा मनुष्य है, जिसने परमेश्वर की दृष्टि में कभी कोई पाप न किया हो? प्रेरित यूहन्ना एक जगह बाइबल में लिखकर कहता है, कि यदि हम कहें कि हमने पाप नहीं किया, तो हम परमेश्वर को झूठा ठहराते हैं (१ यूहन्ना १:१०)।

क्योंकि परमेश्वर का वचन स्वयं कहता है कि सब मनुष्यों ने पाप किया है और वे सबके सब उसकी महिमा से रहित हैं। (रोमियों ३:२३)। सो हम इस नतीजे पर पहुंचते हैं, कि जगत में कोई ऐसी वस्तु नहीं है जिसे प्राप्त करके हम अनन्त जीवन में प्रवेश कर सकते हैं। और कोई ऐसा अच्छा काम नहीं है जिसके बल पर हम कह सकें कि उसे करके हम अनन्त जीवन के वारिस हो सकते हैं। क्योंकि हमारी समस्या पाप है, और हम सब ने पाप किया है, और जब तक हमारे पाप हम से दूर नहीं हो जाते हम अनन्त जीवन नहीं पा सकते।

बाइबल के नए नियम में इस सम्बन्ध में हमें एक बड़ी ही अच्छी कहानी मिलती है। जब प्रभु यीशु इस पृथ्वी पर था, तो लिखा है, कि, "एक बार, किसी सरदार ने उससे पूछा, हे उत्तम गुरू, अनन्त जीवन का अधिकारी होने के लिये मैं क्या करूं? यीशु ने उससे कहा; तू मुझे उत्तम क्यों कहता है? कोई उत्तम नहीं, केवल एक, अर्थात् परमेश्वर। तू आज्ञाओं को तो जानता है," यीशु ने उस से कहा, "कि व्यभिचार न करना, हत्या न करना, और चोरी मत करना, झूठी गवाही न देना, अपने पिता और माता का आदर करना। उसने कहा, मैं तो इन सब को लड़कपन से ही मानता आया हूं। यह सुन यीशु ने उससे कहा, तुझ में अब भी एक बात की घटी है, अपना सब कुछ बेचकर कंगालों को बाट दें; और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा, और आकर मेरे पीछे हो ले।" किन्तु, "वह यह सुनकर बहुत उदास हुआ, क्योंकि वह बड़ा धनी था।" इस पर, "यीशु ने उसे देखकर कहा; धनवानों का परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कैसा कठिन है; परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊंट का सूई के नाके में से निकल जाना सहज है। और सुनने-वालों ने कहा, तो फिर किसका उद्धार हो

सकता है ?" यीशु ने कहा, "जो मनुष्य से नहीं हो सकता, वह परमेश्वर से हो सकता है।" (लूका १८:१८-२७)।

मित्रो, यहाँ हमारे सामने एक ऐसा मनुष्य है जो इस बात से परिचित था कि वह अपने धन-दौलत और अपने धर्म के कामों के बल पर अनन्त जीवन में प्रवेश नहीं कर सकता। उसे मालूम था कि अनन्त जीवन को प्राप्त करने के लिये उसे प्रभु की इच्छा को जानना और उस पर अमल करना आवश्यक है। परन्तु वह उसे पाने के लिये कुछ देने को तैयार न था। वह प्रभु के पास बड़ी ही इच्छा के साथ यह जानने के लिये आया कि अनन्त जीवन का अधिकारी होने के लिये मैं क्या करूं। परन्तु वह दाम चुकाने को तैयार न था। प्रत्यक्ष ही है, कि यद्यपि कि वह मनुष्य अनन्त जीवन पाने की इच्छा तो अपने मन में रखता था, परन्तु अपने जीवन में वह अनन्त जीवन से भी अधिक अपने धन को महत्त्व देता था। इसका अर्थ यह नहीं है कि केवल धन को त्याग देने से ही वह अनन्त जीवन में प्रवेश कर सकता था। क्योंकि अनन्त जीवन में प्रवेश करने के लिये प्रभु यीशु के पीछे हो लेना और उसकी आज्ञाओं का पालन करना आवश्यक है। लेकिन यीशु के पीछे आने से पहिले यह आवश्यक है कि मनुष्य उस वस्तु से अपना मन फिराए जो उसे परमेश्वर से और अपनी आत्मा से और अनन्त जीवन से भी अधिक प्यारी है। परन्तु हमारे संसार में अधिकतर लोग उस धनी मनुष्य के समान हैं जिसने अपने धन के कारण स्वर्ग में अनन्त जीवन को ठुकरा दिया। किन्तु तौभी परमेश्वर के वचन की पुस्तक, पवित्र बाइबल, आज भी हम से यही कहती है कि, "तुम न तो संसार से और न संसार में की वस्तुओं से प्रेम रखो: यदि कोई संसार से प्रेम रखता है, तो उसमें पिता का प्रेम नहीं है। क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्थात् शरीर की अभिलाषा और आँखों की अभिलाषा और जीविका का घमन्ड, वह पिता की ओर से नहीं,

परन्तु संसार ही की ओर से है। और संसार और उसकी अभिलाषाएं दोनों मिटते जाते हैं, पर जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है, वह सर्वदा बना रहेगा।" (१ यूहन्ना २:१५-१७)।

मित्रो, इसमें कोई संदेह नहीं है कि जो कुछ भी संसार में है वह नाशमान है। परन्तु परमेश्वर के वचन की प्रतिज्ञा कितनी महान है। कि जो मनुष्य परमेश्वर की इच्छा पर चलता है वह सर्वदा बना रहेगा। क्या आप परमेश्वर की इच्छा पर चल रहे हैं? क्या आपने उसकी इच्छा को मानकर उसके पुत्र यीशु में बिश्वास किया है? क्या आपने अपने पापों से मन फिराया है? और क्या आपने अपने वर्तमान पापी जीवन को पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा लेकर जल के भीतर दफ़न कर दिया है? (यूहन्ना ३:१६; मत्ती २८:१८-२०; मरकुस १६:१६; रोमियों ६:१-६)। जी हाँ, आप जान सकते हैं कि आनेवाले जीवन में आपकी आत्मा का अनन्त निवास-स्थान कहाँ होगा। यदि आप आज परमेश्वर की इच्छानुसार चल रहे हैं, तो आप उसके साथ सर्वदा बने रहेंगे। किन्तु यदि आपने अभी तक भी परमेश्वर की इच्छा को नहीं माना है, तो आपको चाहिए कि आप अपना मन फिराकर उसके पास आएं और उस अनन्त जीवन के अधिकारी बन जाएं जिसे वह स्वर्ग में उन सब लोगों को देगा जो उसके पुत्र यीशु मसीह के द्वारा उसके पास आते हैं।

लाज़र और धनवान

मित्रो :

इस समय एक बार फिर से हम उन बातों के ऊपर विचार करने जा रहे हैं जो हमें पवित्र बाइबल में मिलती हैं। क्योंकि यह बड़ा ही आवश्यक है कि हम उन सब बातों को जानें और उन सब बातों पर विचार करें जिनके बारे में बाइबल में लिखा हुआ है। यूं तो हमारे संसार में आज पुस्तकों की कोई कमी नहीं है, लाखों और करोड़ों की तादात में आज अनेक पुस्तकें हमारी इस पृथ्वी के ऊपर विद्यमान हैं। परन्तु उनमें से किसी भी पुस्तक की तुलना बाइबल से नहीं की जा सकती। क्योंकि उन पुस्तकों में जो कुछ भी लिखा हुआ है वह मनुष्य के ज्ञान से लिखा हुआ है। परन्तु बाइबल परमेश्वर का वचन है। इसलिये यदि मैं बाइबल के अतिरिक्त जगत की अन्य सभी पुस्तकों को पढ़ लूं तो मेरा ज्ञान केवल पृथ्वी की बातों तक ही सीमित रह जाएगा। यदि मैं बाइबल को न पढ़ूं तो मैं जगत के सृष्टिकर्त्ता सच्चे परमेश्वर और अपने उद्धारकर्त्ता और स्वर्ग और तमाम आत्मिक बातों के ज्ञान से वंचित रह जाऊंगा। यदि मैं बाइबल को न पढ़ूं तो मैं पाप और उसके परिणाम से और अनन्त जीवन और अनन्त मृत्यु के ज्ञान से वंचित रह जाऊंगा। और यदि मैं बाइबल को न पढ़ूं तो मैं इस अजीब सच्चाई से अनजान रह जाऊंगा कि परमेश्वर ने मेरा और जगत का उद्धार करने के लिए अपने वचन को मनुष्य बनाकर जगत में भेज दिया, और उस मनुष्य अर्थात् यीशु मसीह को

एक क्रूस के ऊपर बलिदान करवाकर उस ने उसे जगत के पापों का प्राय श्चित बनाया। ताकि जो कोई उसमें विश्वास करे और अपने पापों से मन फिराकर उसकी आज्ञानुसार जल के भीतर बपतिस्मा ले वह उसकी मृत्यु के द्वारा उद्धार पाए। सो, मित्रो, बाइबल वास्तव में एक ऐसी महत्वपूर्ण पुस्तक है जिसे पढ़ना प्रत्येक मनुष्य के लिए आवश्यक है। और जो लोग इस पुस्तक को स्वयं नहीं पढ़ सकते उन्हें चाहिए कि वे इसमें लिखी बातों को ध्यान लगाकर सुनें। क्योंकि इसमें लिखी प्रत्येक बात मनुष्य के लिए परमेश्वर का वचन है। बाइबल की पुस्तकों के सम्बन्ध में अर्थात् जो पुस्तकें हमें बाइबल में मिलती हैं उनके बारे में एक जगह हम इस प्रकार पढ़ते हैं, कि, "हर एक पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है। ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए।" (२ तीमुथियुस ३ : १६, १७)।

सो परमेश्वर ने हमें अपनी बाइबल इसलिये दी है ताकि हम सब उसकी नाईं सिद्ध बनें। क्योंकि जब तक हम उसके समान पवित्र नहीं बन जाते हम उसकी संगति में नहीं आ सकते। परन्तु यह कैसे हो सकता है? बाइबल में लिखा है कि यह काम मनुष्य से तो नहीं हो सकता, परन्तु परमेश्वर ने यीशु मसीह के द्वारा मनुष्य के लिये यह काम संभव किया है। बाइबल में लिखा है कि परमेश्वर को कभी किसी मनुष्य ने नहीं देखा, परन्तु प्रभु यीशु मसीह ने पृथ्वी पर आकर मनुष्यों में परमेश्वर को प्रगट किया है। (यूहन्ना १ : १४-१८)। और लिखा है, कि वह अर्थात् यीशु परमेश्वर की महिमा का प्रकाश और उसके तत्व की छाप है। (इब्रानियों १ : ३)। इसका अर्थ यह है, कि यीशु के समान बनकर हम परमेश्वर के समान बन सकते हैं। यही कारण है, कि एक जगह बाइबल उपदेश देकर हम से कहती है, कि जैसा

मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो। (फिलिप्पियों २ : ५)। यीशु का स्वभाव परमेश्वर का स्वभाव था, और जब हमारा स्वभाव यीशु के समान बन जाता है तो हमारा स्वभाव परमेश्वर के समान बन जाता है। केवल तभी हम परमेश्वर की संगति में, उसके स्वर्ग में, उसके साथ हमेशा तक रहने के योग्य बनते हैं। इसीलिए बाइबल में एक जगह हम पढ़ते हैं कि प्रभु यीशु ने कहा, कि, "मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।" (यूहन्ना १४ : ६)। सो परमेश्वर के पास पहुंचने के लिए पहिले हमें यीशु के पास आना है, हमें उसके स्वभाव को अपनाना है, हमें उसके समान बनना है, और उसकी शिक्षाओं को मानना है।

प्रभु यीशु मसीह ने अपनी शिक्षा में एक बड़ी ही मुख्य बात हमें यह सिखाई है, कि जो मनुष्य आज पृथ्वी पर जगत के दृष्टिकोण से धनी है या बड़ा है या धर्मी है, वही मनुष्य परमेश्वर के दृष्टिकोण में एक निर्धन, छोटा और अधर्मी हो सकता है। परन्तु जो मनुष्य पृथ्वी पर आज लोगों के दृष्टिकोण में निर्धन और छोटा और अधर्मी है वही मनुष्य परमेश्वर के दृष्टिकोण में एक धनी और बड़ा और धर्मी मनुष्य हो सकता है। प्रभु यीशु ने कहा, "धन्य हो तुम, जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें, और सताएं, और झूठ बोल-बोलकर तुम्हारे विरोध में सब प्रकार की बुरी बातें कहें। आनन्दित और मगन होना क्योंकि तुम्हारे लिए स्वर्ग में बड़ा फल है, इसलिए कि उन्होंने उन भविष्यद्वक्ताओं को जो तुमसे पहिले थे इसी रीति से सताया था।" (मत्ती ५ : ११-१२)। और फिर उसने कहा कि "जो मुझसे हे प्रभु, हे प्रभु कहता है, उनमें से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है।" (मत्ती ७ : २१)। एक अन्य स्थान पर यीशु ने कहा था, कि जो मनुष्य अपने

लिए धन बटोरता है वह परमेश्वर की दृष्टि में धनी नहीं है। (लूका १२ : २१)। और फिर हम बाइबल में लूका की पुस्तक के अठारहवें अध्याय में पढ़ते हैं कि यीशु ने वहाँ दो मनुष्यों का उदाहरण देकर इस प्रकार कहा : "कि दो मनुष्य मन्दिर में प्रार्थना करने के लिए गए; एक फरीसी था और दूसरा चुंगी लेने वाला।" तब, "फरीसी खड़ा होकर अपने मन में यों प्रार्थना करने लगा, कि हे परमेश्वर, मैं तेरा धन्यवाद करता हूं, कि मैं और मनुष्यों की नाईं अन्धेर करने वाला, अन्यायी और व्यभिचारी नहीं, और न इस चुंगी लेनेवाले के समान हूं। मैं सप्ताह में दो बार उपवास करता हूं; मैं अपनी सब कमाई का दसवां अंश भी देता हूं। परन्तु चुंगी लेनेवाले ने दूर खड़े होकर, स्वर्ग की ओर आंखें उठाना भी न चाहा, बरन अपनी छाती पीट-पीटकर कहा; हे परमेश्वर मुझ पापी पर दया कर। मैं तुमसे कहता हूं," प्रभु यीशु ने कहा, "कि वह दूसरा नहीं; परन्तु यही मनुष्य धर्मी ठहराया जाकर अपने घर गया। क्योंकि जो कोई अपने आपको बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा; और जो अपने आप को छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा।" (लूका १८ : १०-१४)।

सो हम देखते हैं, कि इससे कुछ अंतर नहीं पड़ता कि आज आप लोगों की दृष्टि में और अपनी दृष्टि में क्या हैं, परन्तु विशेष बात यह है कि आज आप इस बात पर विचार करके देखें कि आप परमेश्वर की दृष्टि में आज क्या हैं। क्या आप उसकी दृष्टि में धनी हैं? क्या आप उसकी दृष्टि में बड़े हैं? क्या आप उसकी दृष्टि में धर्मी हैं? इस बात पर ध्यान देना बड़ा ही आवश्यक है। यह बात बड़ी ही गंभीर है। क्योंकि जो आप आज हैं, वह केवल एक थोड़े ही समय के लिये हैं। परन्तु जो आप भविष्य में होंगे वह आप हमेशा के लिए होंगे। क्योंकि जब आप इस संसार से चले जाएंगे तो आप उस अनन्तकाल में प्रवेश करेंगे जहाँ से कभी कोई मनुष्य किसी भी रूप में वापस नहीं आता

और जहाँ मनुष्य की स्थिति में कभी कोई बदलाव नहीं आता। क्या आप वास्तव में सुन रहे हैं ? इस बात को स्पष्ट रूप से समझाने के लिए प्रभु यीशु ने एक जगह इस प्रकार कहा था, कि, "एक धनवान मनुष्य था जो बैंजनी कपड़े और मलमल पहिनता और प्रतिदिन सुख-विलास और धूम-धाम के साथ रहता था। और लाज़र नाम का एक कंगाल घावों से भरा हुआ उसकी डेवढ़ी पर छोड़ दिया जाता था। और वह चाहता था, कि धनवान की मेज़ पर की झूठन से अपना पेट भरे; वरन कुत्ते भी आकर उसके घावों को चाटते थे। और ऐसा हुआ कि वह कंगाल मर गया, और स्वर्गदूतों ने उसे लेकर इब्राहीम की गोद में पहुंचाया; और धनवान भी मरा; और गाड़ा गया। और अधोलोक में उसने पीड़ा में पड़े हुए अपनी आँखें उठाईं, और दूर से इब्राहीम की गोद में लाज़र को देखा। और उसने पुकार कर कहा, हे पिता इब्राहीम, मुझ पर दया करके लाज़र को भेज दे, ताकि वह अपनी उंगुली का सिरा पानी में भिगोकर मेरी जीभ को ठंडी करे, क्योंकि मैं इस ज्वाला में तड़प रहा हूं। परन्तु इब्राहीम ने कहा; हे पुत्र स्मरण कर, कि तू अपने जीवन में अच्छी वस्तुएं ले चुका है, और वैसे ही लाज़र बुरी वस्तुएं : परन्तु अब वह यहाँ शान्ति पा रहा है, और तू तड़प रहा है।" और उसने कहा, कि, "इन सब बातों को छोड़ हमारे और तुम्हारे बीच एक भारी गड़हा ठहराया गया है कि जो यहाँ से उस पार तुम्हारे पास जाना चाहें, वे न जा सकें, और न कोई वहाँ से इस पार हमारे पास आ सकें।" (लूका १६ : १९-२६)।

मित्रो, कितना ही अच्छा हो यदि आज प्रत्येक मनुष्य अपने आपको परमेश्वर की दृष्टि से जांचकर देखे, अर्थात् उसके वचन में लिखी बातों से अपने जीवन की तुलना करके देख ले, कि आज वह परमेश्वर की दृष्टि में कहाँ है। अभी जिस कहानी को हमने बाइबल में से पढ़ा है, इसमें प्रभु हमें यह नहीं सिखा रहा है कि प्रत्येक धनी नरक में

जाएगा और प्रत्येक निर्धन स्वर्ग में जाएगा। परन्तु जिस विशेष शिक्षा को प्रभु ने हमें इसमें दिया है वह यह है, कि जो आनन्द हमें धन और जगत की वस्तुओं के द्वारा मिलता है वह केवल एक थोड़े से ही समय का होता है। परन्तु जो आनन्द हमें परमेश्वर के पास उसके स्वर्ग में प्राप्त होगा वह हमेशा का आनन्द होगा। और उस हमेशा के आनन्द को प्राप्त करने के लिए चाहे हमें इस पृथ्वी पर एक कंगाल का सा ही जीवन क्यों न व्यतीत करना पड़े, यह इससे भला है कि हम पृथ्वी पर थोड़े दिन के सुख-विलास का जीवन व्यतीत करें। इसलिए मनुष्य को चाहिए कि जगत की वस्तुओं की चिन्ता छोड़कर वह सबसे पहिले इस बात की ओर ध्यान दे : कि यदि आज मेरी मृत्यु हो जाए तो मैं हमेशा के लिये किस जगह रहने के लिए जाऊंगा। पवित्र बाइबल में लिखा है, कि जो मनुष्य प्रभु यीशु मसीह में विश्वास करता है और जिसने अपने सब पापों से मन फिराकर यीशु की आज्ञानुसार अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा ले लिया है, और जो मनुष्य प्रभु यीशु के जीवन का अनुसरण कर रहा है, वह यीशु की मृत्यु के कारण परमेश्वर के निकट धर्मी ठहरेगा और उसके स्वर्ग में हमेशा का जीवन पाएगा। (रोमियों ८ : १; गलतियों ३ : २६, २७; मरकुस १६ : १६; प्रेरितों २ : ३८, ३९; प्रकाशितवाक्य २ : १०; २१ : ३-७)।

आज आपकी आशा क्या है ? क्या आप स्वर्ग में अनन्त जीवन पाएंगे ? क्या आपने अपने जीवन को प्रभु यीशु मसीह को सौंप दिया है ?

खोजा

मित्रो :

प्रभु यीशु ने एक बार इस प्रकार कहा था, "कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित रहेगा।" (मत्ती ४:४)। प्रभु के ये शब्द हमारे आज के संसार के लिये कितने अधिक महत्वपूर्ण हैं। आज जब कि मनुष्य जगत की वस्तुओं को प्राप्त करने की होड़ में लगा हुआ है। आज जबकि मनुष्य अपनी देह को बचाने और उसे आनन्दित रखने के लिये अपनी सारी शक्ति-भर प्रयत्न कर रहा है। यीशु के ये शब्द आज प्रत्येक मनुष्य के लिए कितने अधिक विचारपूर्ण हैं। "कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित रहेगा।" क्योंकि मनुष्य केवल मांस और हड्डियों का बना हुआ एक प्राणी नहीं है। वह पशुओं की तरह नहीं है जिनका अस्तित्व मरने के बाद खत्म हो जाता है। परन्तु वह एक आत्मिक प्राणी है, अर्थात् वह परमेश्वर के स्वरूप पर बना हुआ आत्मा है। जिसे भौतिक भोजन तथा वस्तुओं की आवश्यकता नहीं है। परन्तु आत्मिक भोजन की आवश्यकता है। परमेश्वर जिसने मनुष्य को बनाया है वह मनुष्य की दोनों ही आवश्कताओं से परिचित है। इसलिये न केवल उसने मनुष्य की देह के लिये नाना प्रकार की भोजन वस्तुओं को ही बनाया है। परन्तु मनुष्य की आत्मा के लिये

उसने मनुष्य को अपना वचन दिया है। जिस प्रकार भौतिक भोजन मनुष्य को शारीरिक जीवन देता है, उसी प्रकार आत्मिक भोजन मनुष्य की आत्मिक जीवन देता है । आत्मिक भोजन परमेश्वर का वचन है। जिसे सुनकर और मानकर मनुष्य को आत्मिक बल मिलता है। पवित्र बाइबल, जिसमें लिखी हुई बातों पर विचार करने अब हम जा रहे हैं, परमेश्वर का वचन का । इस पुस्तक में लिखी हुई बातों के द्वारा परमेश्वर आज हम से बातें करता है। वह हमें बताता है कि वह सारे जगत और मनुष्य का बनानेवाला है। परन्तु मनुष्य अपने स्वभाव से परमेश्वर का विरोधी है। इस कारण वह परमेश्वर की संगति से अलग है। (रोमियों ३:२३)। परन्तु बाइबल में परमेश्वर ने हमें एक सुसमाचार दिया है, अर्थात् एक खुशखबरी दी है। और वह सुसमाचार यह है, कि उसने अपने सामर्थी वचन को मनुष्य के रूप में बनाकर पृथ्वी पर भेज दिया । वह मनुष्य प्रभु यीशु मसीह था। बाइबल में परमेश्वर ने हमें प्रभु यीशु के जीवन के बारे में लिखवाकर दिया है। ताकि हम उसके जीवन को अपने जीवन का आदर्श बना लें। जिससे कि हम पृथ्वी पर ऐसा जीवन निर्वाह कर सकें जैसा प्रभु यीशु मसीह का था। परन्तु प्रभु यीशु मसीह को परमेश्वर ने पृथ्वी पर मरने के लिये भेजा था। इसलिये जब यीशु के जीवन से परमेश्वर ने हमें एक सिद्ध आदर्श दे दिया । तो वह परमेश्वर की अद्भुत युक्ति तथा उसकी इच्छा से एक क्रूस के ऊपर लटकाया गया। पवित्र बाइबल में लिखा है, कि इस प्रकार परमेश्वर ने यीशु की मृत्यु के द्वारा जगत के पापों का प्रायश्चित किया। परन्तु यह सब परमेश्वर ने हमारे लिये किया है, ताकि अपने पापों से मुक्ति पाकर हम उसके पास आ जाएं। किन्तु बाइबल में परमेश्वर ने मनुष्य को कुछ आज्ञाएं दी हैं, जिन्हें मानकर वह परमेश्वर की संगति में वापस आ सकता है। बाइबल हमें बताती है, कि यीशु की

मृत्यु के बाद परमेश्वर ने तीसरे दिन उसे फिर से जिला दिया। (१ कुरिन्थियों १५:१-४) और जिस प्रकार वह स्वर्ग से आया था वैसे ही वह फिर स्वर्ग पर उठा लिया गया। परन्तु स्वर्ग में वापस जाने से पहले यीशु चालीस दिन तक इस पृथ्वी पर रहा। और बाइबल में लिखा है, कि यीशु ने अपने चेलों के पास आकर उनसे यों कहा, "कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ: और देखो; मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं।" और, फिर, "उसने उनसे कहा, तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।" (मत्ती २८:१८-२०; मरकुस १६:१५-१६)। सो इस प्रकार हम देखते हैं, कि परमेश्वर ने अपनी बाइबल के द्वारा न केवल हमें एक सुसमाचार दिया है। किन्तु उसने हमें यह भी बताया है कि उसकी आज्ञा को मानकर उसके सुसमाचार के द्वारा हम किस प्रकार अपने पापों से उद्धार प्राप्त कर सकते हैं।

मित्रो, यद्धपि आज मनुष्य ने अपने लिये अनेक परमेश्वर बना लिये हैं और अनेक उद्धार पाने के मार्ग बना लिये हैं। परन्तु परमेश्वर का वचन आज भी हमें यही सिखाता है कि हम सब का केवल एक ही परमेश्वर है, और आज वह हम सबका केवल एक ही तरह से उद्धार करता है, यानि जब हम उसके पुत्र यीशु मसीह मे विश्वास लाते हैं और अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेते हैं, (प्रेरितों २:३८), तो वह हमारा उद्धार करता है। बाइबल में अनेक जगह हम इस सम्बन्ध में पढ़ते हैं, कि यीशु के चेलों ने प्रत्येक

स्थान पर परमेश्वर के सुसमाचार का प्रचार किया, और जब लोगों ने उनकी प्रतीति की तो उन्होंने प्रभु यीशु में विश्वास किया और बपतिस्मा लिया। एक जगह हम पढ़ते हैं कि जब फिलिप्पुस नाम का यीशु का एक चेला सामरिया नगर में जाकर सुसमाचार का प्रचार करने लगा, तो लोग, क्या पुरुष क्या स्त्री बपतिस्मा लेने लगे।" (प्रेरितों ८:१२)। और फिर थोड़ा और आगे चलकर हम इस प्रकार पढ़ते हैं, कि, "फिर प्रभु के एक दूत ने फिलिप्पुस से कहा; उठकर दक्खिन की ओर उस मार्ग पर जा, जो यरुशलेम से अज्जाह को जाता है, और जंगल में है। वह उठकर चल दिया, और देखो, कूश देश का एक मनुष्य आ रहा था जो खोजा और कूशियों की रानी कन्दाके का मंत्री और खजान्ची था, और भजन करने को यरुशलेम आया था। और यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक पढ़ता लौटा जा रहा था। तब आत्मा ने फिलिप्पुस से कहा, निकट जाकर इस रथ के साथ हो ले। फिलिप्पुस ने उस ओर दौड़कर उसे यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक पढ़ते हुए सुना, और पूछा, कि तू जो पढ़ रहा है उसे समझता भी है? उसने कहा, जब तक कोई मुझे न समझाए तो मैं क्योंकर समझूं? और उसने फिलिप्पुस से बिनती की, कि चढ़कर मेरे पास बैठ। पवित्र शास्त्र का जो अध्याय पढ़ रहा था, वह यह था; "कि वह भेड़ की नांई बध होने को पहुंचाया गया, और जैसा मेम्ना अपने ऊन कतरनेवालों के सामने चुपचाप रहता है, वैसे ही उसने भी अपना मुँह न खोला। उसकी दीनता में उसका न्याय होने नहीं पाया, और उसके समय के लोगों का वर्णन कौन करेगा, क्योंकि पृथ्वी से उसका प्राण उठाया जाता है।" इस पर खोजे ने फिलिप्पुस से पूछा; मैं तुझ से बिनती करता हूं, यह बता कि भविष्यद्वक्ता यह किसके विषय में कहता है, अपने या किसी दूसरे के विषय में। तब फिलिप्पुस ने अपना मुँह खोला, और इसी शास्त्र से

आरम्भ करके उसे यीशु का सुसमाचार सुनाया। मार्ग में चलते-चलते वे किसी जल की जगह पहुंचे, तब खोजे ने कहा, देख यहां जल है। अब मुझे बपतिस्मा लेने में क्या रोक है। फिलिप्पुस ने कहा, यदि तू सारे मन से विश्वास करता है तो हो सकता है। उसने उत्तर दिया कि मैं विश्वास करता हूं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है। तब उसने रथ खड़ा करने की आज्ञा दी, और फिर फिलिप्पुस और खोजा दोनों जल में उतर पड़े, और उसने उसे बपतिस्मा दिया। जब वे जल में से निकलकर ऊपर आए, तो प्रभु का आत्मा फिलिप्पुस को उठा ले गया, सो खोजे ने उसे फिर न देखा, और वह आनन्द करता हुआ अपने मार्ग चला गया।" (प्रेरितों ८:२६-३९)।

मित्रो, यहाँ अभी हमने बाइबल में से एक ऐसे मनुष्य के बारे में पढ़ा है जो एक अजनबी था। वह पवित्र शास्त्र की पुस्तक पढ़ते हुए अपने मार्ग को जा रहा था। परन्तु जब उसने परमेश्वर के सुसमाचार को सुना, तो उसने प्रचारक से पूछा कि अब मुझे बपतिस्मा लेने में क्या रोक है। प्रत्यक्ष ही है कि वह मनुष्य अपनी आत्मा के उद्धार के प्रति बड़ा ही चिन्तित था। उसे अपनी आत्मा को बचाने की चिन्ता थी। उसने परमेश्वर के सुसमाचार को सुना और अब वह उसे मानना चाहता था। वह परमेश्वर के प्रेम की कथा को सुनकर आनन्द से भर गया और वह उसकी आज्ञा को तुरन्त मानना चाहता था। उसने पूछा, कि अब मुझे बपतिस्मा लेने में क्या रोक है? वह परमेश्वर की आज्ञा को मानने को उसी वक्त तैयार था। क्योंकि वह अपनी आत्मा के महत्व को समझता था; वह जीवन की अनिश्चितता को समझता था। सो, कितना बड़ा पाठ आज हम इस मनुष्य के जीवन से सीखते हैं। जबकि आज हम अपना सारा समय जगत की वस्तुओं की खोज करने में लगा रहे हैं, वह मनुष्य परमेश्वर का भजन करने के लिये यात्रा कर रहा था और यात्रा में वह परमेश्वर

के वचन की पुस्तक में से पढ़ते हुए जा रहा था। जबकि हमें केवल अपने शरीर की ही चिन्ता रहती है, कि हम क्या खाएंगे और क्या पीएंगे, वह मनुष्य परमेश्वर के धर्म और उसके राज्य की खोज कर रहा था; उसे अपनी आत्मा को बचाने की चिन्ता थी। और जबकि हम परमेश्वर के वचन को सुनकर टाल देते हैं, उस मनुष्य ने उसके वचन को सुनकर पूछा कि अब मुझे परमेश्वर की आज्ञा मानने में क्या रोक है। और उसने तुरन्त प्रभु की आज्ञा का पालन भी किया।

मित्रो, आज आपके जीवन में सबसे महत्वपूर्ण वस्तु क्या है? क्या वह वस्तु आपको बपतिस्मा लेने से रोक रही है? क्या वह वस्तु आपकी आत्मा से भी बढ़कर मूल्य रखती है? मेरी आशा है, कि आप अपनी आत्मा के विशाल महत्व की ओर अवश्य ही ध्यान देंगे। प्रभु यीशु ने एक बार कहा था, कि यदि मनुष्य सारे जगत को भी प्राप्त कर ले और नरक में अपनी आत्मा की हानि उठाए तो उसे क्या लाभ होगा? (मत्ती १६:२६)। क्या आपने सुना? जी हां, आपकी आत्मा सारे जगत से भी विशाल है। इसलिये आपको चाहिए कि खोजे की तरह परमेश्वर की आज्ञा का पालन करके आप अपनी आत्मा को बचा लें। क्या आप ऐसा करेंगे?

हनन्याह और सफ़ीरा

मित्रो :

आज हम अपने पाठ में हनन्याह और सफ़ीरा के सम्बन्ध में देखने जा रहे हैं। आप में से जिन लोगों ने बाइबल के नए नियम को पढ़ा है। उन्होंने हनन्याह और सफ़ीरा के बारे में अवश्य ही पढ़ा होगा। हनन्याह और सफ़ीरा उस समय में रहते थे जबकि प्रभु यीशु मसीह की मसीहीयत का आरम्भ हुआ था, जब उसके प्रेरित उसके सुसमाचार का प्रचार कर रहे थे, और जब उसकी कलीसिया का आरम्भ हुआ था। यह समय मसीह की कलीसिया के लिए एक बड़ा ही कठिन समय था। क्योंकि जिन यहूदियों ने मसीह को क्रूस पर चढ़ाकर मार दिया था उन्हीं के बीच में उसके जी उठने का प्रचार किया जा रहा था किन्तु यातना तथा उपद्रव के होते हुए भी प्रभु का सुसमाचार इतना प्रबल था, कि बाइबल में लिखा है कि लोग सैकड़ों और हज़ारों की संख्या में यीशु में विश्वास लाकर बपतिस्मा ले रहे थे और यूं मसीह की कलीसिया हर एक दिन बढ़ती ही जा रही थी। (प्रेरितों २ : ४१; ४ : ४; ५ : १४)। उन दिनों में कलेश के कारण सारी कलीसिया प्रेरितों सहित यरुशलेम में ही थी, जहाँ पर उसकी बुनियाद पड़ी थी। और प्रेरितों की अगुवाई में सम्पूर्ण कलीसिया एक साथ थी। इस सम्बन्ध में बाइबल में हम इस प्रकार पढ़ते हैं :

"और विश्वास करनेवालों की मन्डली एकचित्त और एक मन की थी, यहाँ तक कि कोई भी अपनी सम्पत्ति अपनी नहीं कहता था। परन्तु सब कुछ साझे का था। और प्रेरित बड़ी सामर्थ से प्रभु यीशु के जी उठने की गवाही देते रहे और उन सब पर बड़ा अनुग्रह था। और उनमें कोई भी दरिद्र न था; क्योंकि जिनके पास भूमि या घर थे, वे उनको बेच बेचकर, बिकी हुई वस्तुओं का दाम लाते, और उसे प्रेरितों के पाँवों पर रखते थे। और जैसी जिसे आवश्यकता होती थी, उसके अनुसार हर एक को बाँट दिया करते थे। और युसुफ़ नाम,

कुप्रुस का एक लेवी था जिसका नाम प्रेरितों ने बर-नबा अर्थात् (शान्ति का पुत्र) रखा था। उसकी कुछ भूमि थी, जिसे उसने बेचा, और दाम के रुपए लाकर प्रेरितों के पांवों पर रख दिए।" (प्रेरितों ४ : ३२-३७)। किन्तु इन बातों के बाद हम यूं पढ़ते हैं :

कि "हनन्याह नाम एक मनुष्य, और उसकी पत्नी सफ़ीरा ने कुछ भूमि बेची। और उसके दाम में से कुछ रख छोड़ा; और यह बात उसकी पत्नी भी जानती थी, और उसका एक भाग लाकर प्रेरितों के पांवों के आगे रख दिया। परन्तु पतरस ने कहा; हे हनन्याह ! शैतान ने तेरे मन में यह बात क्यों डाली है कि तू पवित्र आत्मा से झूठ बोले, और भूमि के दाम में से कुछ रख छोड़े ? जब तक वह तेरे पास रही क्या तेरी न थी ? और जब बिक गई तो क्या तेरे वश में न थी ? तू ने यह बात अपने मन में क्यों विचारी ? तू मनुष्यों से नहीं, परन्तु परमेश्वर से झूठ बोला। ये बातें सुनते ही हनन्याह गिर पड़ा, और प्राण छोड़ दिये; और सब सुननेवालों पर बड़ा भय छा गया। फिर जवानों ने उठकर उसकी अर्थी बनाई और बाहर ले जाकर गाड़ दिया। लगभग तीन घंटे के बाद उसकी पत्नी, जो कुछ हुआ था न जानकर, भीतर आई। तब पतरस ने उससे कहा; मुझे बता क्या तू ने वह भूमि इतने में ही बेची थी ? उसने कहा; हाँ, इतने ही में। पतरस ने उससे कहा; यह क्या बात है, कि तुम दोनों ने प्रभु के आत्मा की परीक्षा के लिए एका किया ? देख, तेरे पति के गाड़नेवाले द्वार ही पर खड़े हैं, और तुझे भी बाहर ले जाएंगे। तब वह तुरन्त उसके पांवों पर गिर पड़ी, और प्राण छोड़ दिए : और जवानों ने भीतर आकर उसे मरा पाया, और बाहर ले जाकर उसके पति के पास गाड़ दिया। और सारी कलीसिया पर और इन बातों के सब सुननेवालों पर, बड़ा भय छा गया।" (प्रेरितों ५ : १-११)।

यहाँ इस घटना से और विशेषकर हनन्याह और सफ़ीरा के चरित्र से हम आज अपने लिए कुछ बड़े ही महत्वपूर्ण पाठ सीखते हैं। और वास्तव में परमेश्वर ने इन बातों के सम्बन्ध में अपनी पुस्तक में

लेखक को लिखने के लिए इसीलिये प्रेरणा दी ताकि इनके द्वारा हम अपने लिए शिक्षा ग्रहण करें। सो वे बातें क्या हैं ?

सबसे पहिली बात हनन्याह और सफ़ीरा के सम्बन्ध में यहाँ हम यह देखते हैं, कि जब उन्होंने देखा कि बर-नबा ने अपनी भूमि बेचकर उसके दाम के रुपए लाकर प्रेरितों को दे दिये हैं। तो इस बात से प्रभावित होकर उन्होंने भी अपनी कुछ भूमि बेची। वे उस भूमि को बेचकर उसका दाम लाकर बर-नबा की तरह कलीसिया के लिये प्रेरितों को देना चाहते थे। परन्तु जब उन्होंने भूमि को बेच दिया तो पैसों को देखकर उनके मन में लालच आ गया। सो दाम के पूरे रुपए प्रभु के कार्य के लिये न देकर उन्होंने उसमें से कुछ अपने पास रख लिये। लोभ वास्तव में मनुष्य की एक बहुत बड़ी समस्या है। यह एक ऐसा पाप है जिसके कारण न जाने कितने लोग परमेश्वर के स्वर्ग में प्रवेश न कर सकेंगे। क्योंकि लोभ, और विशेषकर रुपए का लोभ मनुष्य को पाप की ओर अग्रसर करता है। रुपए के लोभ के कारण मनुष्य झूठ बोलता है, चोरी करता है, और डाके डालता है। रुपए के लोभ के कारण मनुष्य क्रोध और शत्रुता करता है, और यदि उसे किसी की जान भी लेनी पड़ जाए तो वह रुपए को प्राप्त करने के लिए इससे भी पीछे नहीं हटता। बहुतेरे लोग अपने जीवन में परमेश्वर से भी अधिक स्थान रुपए को देते हैं। इसीलिए पवित्र बाइबल में एक स्थान पर यूं लिखा है, कि, "रुपए का लोभ सब प्रकार की बुराईयों की जड़ है, जिसे प्राप्त करने का प्रयत्न करते हुए कितनों ने विश्वास से भटककर अपने आपको नाना प्रकार के दुखों से छलनी बना लिया है।" (१ तीमुथियुस ६ : १०)। प्रभु यीशु ने एक जगह कहा था, "चौकस रहो, और हर प्रकार के लोभ से अपने आप को बचाए रखो : क्योंकि किसी का जीवन उसकी सम्पत्ति की बहुतायत से नहीं होता।" (लूका १२ : १५)। बाइबल में हम ऐसे बहुत से उदाहरणों को भी पढ़ते हैं जिनमें हम देखते हैं कि रुपए के लोभ के कारण अनेक लोगों ने अपनी आत्मा को खो दिया। और उनमें सबसे मुख्य उदाहरण हमें यहूदा इस्करियोती का मिलता है,

जो स्वयं प्रभु यीशु मसीह का ही एक चेला था, परन्तु रुपए के लोभ के कारण वह परमेश्वर के पुत्र को भी उसके शत्रुओं के हाथों पकड़वाने से न रुका। सचमुच में रुपए का लोभ सब तरह की बुराईयों की जड़ है। और हमें आज प्रभु यीशु के इन शब्दों की ओर ध्यान देने की बड़ी ही आवश्यकता है, कि चौकस रहो, और हर प्रकार के लोभ से अपने आपको बचाए रखो।

दूसरी बात जिसे हम हनन्याह और सफ़ीरा के इस वृत्तान्त से सीखते हैं, यह है कि सबसे अधिक मनुष्य को अपने मन की रक्षा करनी चाहिए। पवित्र बाइबल में लिखा है, कि, "सबसे अधिक अपने मन की रक्षा कर; क्योंकि जीवन का मूल स्त्रोत वही है।" (नीति-वचन ४ : २३)। जब हनन्याह और सफ़ीरा ने भूमि को बेचा था तो ऐसा करने का निश्चय उन्होंने अपने मन में किया था। किन्तु जब उन्होंने रुपए को देखा तो उनका मन बदल गया। एक बार प्रभु यीशु ने शिक्षा देकर कहा था, कि "धन्य हैं वे, जिनके मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।" (मत्ती ५ : ८)। मनुष्य का मन सचमुच में बड़ा चंचल है, जैसा कि हम हनन्याह और सफ़ीरा के बारे में देखते हैं। और इसलिये यह बात बड़ी ही सच है कि मनुष्य को सबसे अधिक रक्षा अपने मन की करनी चाहिए। क्योंकि जो कुछ भी मनुष्य करता है उसे करने से पहिले वह अपने मन में सोचता है। सुनिये, कि इस सम्बन्ध में प्रभु यीशु ने क्या कहा है, यीशु ने कहा, कि, "जो मनुष्य में से निकलता है, वही मनुष्य को अशुद्ध करता है। क्योंकि भीतर से अर्थात् मनुष्य के मन से, बुरी-बुरी चिन्ता, व्यभिचार, चोरी, हत्या, परस्त्रीगमन, लोभ, दुष्टता, छल, लुचपन, कुदृष्टि, निन्दा, अभिमान, और मूर्खता निकलती है। ये सब बुरी बातें भीतर ही से निकलती हैं और मनुष्य को अशुद्ध करती हैं।" (मरकुस ७:२०-२३)।

फिर हम यह भी देखते हैं हनन्याह और सफ़ीरा की इस कहानी से, कि मनुष्य को यह याद रखना चाहिए कि परमेश्वर सर्वव्यापी और सर्वज्ञानी है। अर्थात् वह सब जगह है और सब कुछ जानता है,

वह प्रत्येक मनुष्य के कामों को जानता है, और उससे कुछ भी छिपा नहीं है। मनुष्य मनुष्य से झूठ बोल सकता है, मनुष्य मनुष्य को धोखा दे सकता है, लेकिन परमेश्वर को कोई भी मनुष्य धोखा नहीं दे सकता। हनन्याह और सफ़ीरा को यह याद न रहा कि प्रेरित पतरस परमेश्वर के पवित्र आत्मा से परिपूर्ण था। इसलिये वे पतरस से नहीं परन्तु पवित्र आत्मा से झूठ बोल रहे थे जो मनुष्य को केवल बाहर ही से नहीं परन्तु भीतर से भी जानता है। परमेश्वर जानता है कि आज आपका जीवन किस प्रकार का है। परन्तु आज वह किसी भी मनुष्य को, हनन्याह और सफ़ीरा की तरह, उसके पाप के लिये दण्डित नहीं कर रहा है। क्योंकि बाइबल में लिखा है, कि परमेश्वर ने एक दिन ठहराया है जिसमें वह यीशु मसीह के द्वारा अपने वचन से सब मनुष्यों का न्याय करेगा। (प्रेरितों १७ : ३०, ३१; यूहन्ना १२ : ४८)। पवित्र बाइबल कहती है, "क्योंकि अवश्य है, कि हम सबका हाल मसीह के न्याय आसन के सामने खुल जाए, कि हर एक व्यक्ति अपने-अपने भले-बुरे कामों का बदला जो उसने देह के द्वारा किए हों पाए।' (२ कुरिन्थियों ५ : १०)।

इस बात को दृष्टि में रखकर, मित्रो, एक बड़ा ही ख़ास सवाल हमारे सामने यह आ जाता है, अर्थात् क्या हम में से हर एक उसके न्याय आसन के सामने खड़ा होने को तैयार है? यानि क्या हम सबने अपने-अपने पापों से उद्धार प्राप्त कर लिया है? प्रभु यीशु ने कहा है, कि जो मनुष्य मुझमें विश्वास करेगा और अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेगा वह अपने पापों से उद्धार पाएगा। (मरकुस १६ : १६; प्रेरितों २ : ३८)। प्रभु यीशु परमेश्वर का पुत्र है। उसने हम सबके पापों का प्रायश्चित करने के लिए क्रूस के ऊपर से अपना पवित्र लोहू बहाया है। (१ यूहन्ना ४ : १०; १ पतरस १ : १८, १९; २ : २४)। इसलिये जब हम उसमें विश्वास लाकर उसकी आज्ञा को मानते हैं तो वह हमारे सब पापों से हमारा उद्धार करता है। (इब्रानियों ५ : ८, ९)।